भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 10 | **अगस्त** 2009 | **अंक** 8

पुण्य स्मरण

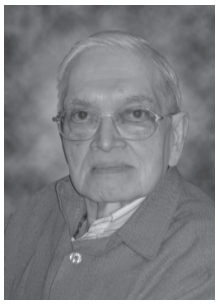

पुण्यश्लोक स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी
(19 अगस्त 1928 - 7 अक्टूबर 2007)

भावांजलि

पूज्य!

आपका परिचय, आपकी लोकयात्रा का कीर्ति-स्तम्भ 'विश्वविद्यालय प्रकाशन' है, जिसका एक-एक प्रस्तर आपकी निरन्तर तप:साधना की दीप्ति से गढ़ा गया है। युग-संक्रान्ति के संक्रमण के बीच गोरखपुर के पैतृक आवास पर युग-साधक के रूप में आपका अवतरण हमारे अस्तित्व का कारक और हमारे जीवन-धर्म का संवाहक रहा है। आपने अपने अध्ययन-काल से लेकर कर्म-संकुल जीवन-यात्रा के बीच सहस्राधिक साहित्यकारों, विचारकों, राजनेताओं, दार्शनिकों आदि युग-मनीषियों के साथ समागम करते हुए अपने युग को आत्मसात् किया जिसकी प्रतिध्वनि आपकी प्रेरणा, आदर्श और विचारों में गूँजती रही। गोरखपुर में लगभग शून्य से अपना व्यवसाय आरम्भ करके 1964 में हम सबको लेकर आप सपरिवार काशी आ गये। फिर यहीं, कालभैरव स्थित चंपालालजी के आवास में किरायेदार के रूप में रहते हुए, आपने यहाँ के वातावरण में अपनी साधना आरम्भ कर दी। आपकी सतत-साधना फलवती होने लगी। विश्वविद्यालय प्रकाशन क्रमश: एक परिचित नाम बनने लगा, जिसे आपने राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्रदान की। अपने व्यवसाय के साथ-साथ कितनी ही सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थाओं से आपका निकट सम्बन्ध रहा जिनके दायित्वों का निर्वाह भी आप अनासक्त-भाव से करते रहे। अपनी अशीतिपर अवस्था में भी आपकी सक्रियता हमें ही क्या, सबको चकित करती थी। अपनी प्रबल आत्मशक्ति से काल-

शेष पृष्ठ 2 पर

तेजस्वि नावधीतमस्तु!

''हमारा अध्ययन हमें तेजस्विता प्रदान करे। हमारी शिक्षा की अग्नि से ऊर्जस्वित रहे हमारी देह, प्राण, चेतना। हमारे आचार-विचार-व्यवहार में परिलक्षित हो हमारे अध्ययन की अन्त: प्रभासित तेजोदीप्ति।''

यह वैदिक प्रार्थना कितनी भी पुरानी हो किन्तु शैक्षणिक फलश्रुति के रूप में इसका कथ्य और उपयोगिता हर युग के लिए प्रासंगिक है। पिछले दिनों एक बड़ी तादाद में व्यक्तित्व-विकास से सम्बन्धित सैकड़ों देशी-विदेशी किताबें बाज़ार में आ गयीं। इन किताबों के प्रति लोगों में, विशेषकर छात्रों में ज्यादा रुचि दिखलायी पड़ी और इनका विक्रय भी लगातार हो रहा है। आखिर ऐसा क्यों? विश्लेषण करने पर साफ दिखलायी पड़ता है कि हमारी वर्तमान शिक्षा-पद्धति में छात्रों के समग्र-व्यक्तित्व के विकास की अवधारणा समाप्त हो चुकी है। शिक्षा केवल डिग्रियों तक सीमित हो गयी है। शिक्षा-क्षेत्र में व्याप्त कदाचार के दायरे में किसी तरह परीक्षा पास करने के बाद छात्र अपने जीवन की व्यावहारिक समस्याओं से घिर जाता है। यहाँ उसकी शिक्षा का वास्तविक मूल्यांकन आरम्भ होता है। यदि शिक्षा की दीप्ति उसके व्यक्तित्व में झलकती है तो वह सफलता अर्जित करता है अन्यथा कदम-कदम पर उसे असफलता मिलती है और अंतत: हताशा उसे समाज में व्याप्त किसी भी दुराचार का हिस्सा बना देती है। डिग्री-प्रधान शिक्षा की इसी कमी को पूरा करने के लिए आवश्यक है व्यक्ति के समग्र व्यक्तित्व का विकास। अपनी इसी कमी को पूरा करने के लिए लोग ऐसी किताबों की तलाश में भटकते हैं जो उन्हें पूर्णता दे सके, जीवन में सफलता प्रदान कर सके। व्यक्तित्व विकास से सम्बन्धित सूत्र यदि हमारी शिक्षा-व्यवस्था में नहीं हैं तो समझ लेना चाहिए कि ऐसी शिक्षा अधूरी है जो हमें पूर्णता नहीं प्रदान करती।

हमारी वर्तमान सदी (21वीं सदी) परिवर्तन की तीव्र प्रक्रिया के साथ आरम्भ हुई है। 19वीं-20वीं सदी के दर्शन-चिन्तन और वैज्ञानिक आविष्कारों ने विश्व-स्तर पर आंतर-बाह्य परिवर्तन का परिदृश्य प्रस्तुत कर दिया था। उसी बीजारोपण से अंकुरित-पल्लवित है हमारा वर्तमान। आज का शिशु, शिशु नहीं रहा; किशोर युवा हो चुका है और युवा गम्भीर विश्लेषक एवं समस्याग्रस्त। वैज्ञानिक परिदृश्य के इस सार्वभौमिक-संक्रमण के दौर में पूर्ण स्थापित मूल्य-मानक या तो अर्थ खो रहे हैं या बदल रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में भी इसी बदलाव को देखा जा रहा है। साहित्य-संस्कृति-कला, मानविकी, वाणिज्य, विज्ञान आदि विभिन्न विषयों की शाखाओं-प्रशाखाओं के अध्ययन-अनुसन्धान में भी काफी परिवर्तन हो चला है। पारिस्थितिक दबाव के चलते पढ़ाई के साथ ही रोज़गार या पढ़ाई पूरी होते ही रोज़गार एक ज़रूरी-ज़रूरत है। इसीलिए रोज़गार-परक विषयों की ओर छात्रों-अभिभावकों का रुझान स्वाभाविक है, किन्तु ऐसी स्थिति में छात्र के व्यक्तित्व के पूर्ण विकास की भी उतनी ही आवश्यकता है जितनी नौकरी या रोज़गार की।

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

मानवीय-व्यक्तित्व के समग्र विकास के विभिन्न पहलुओं पर विचार करते हुए भारतीय-मनीषा ने शिक्षा के क्षेत्र में समूचे मानव जीवन को ही शामिल कर लिया था और सैद्धान्तिक अध्ययन की व्यावहारिक पद्धति विकसित की थी। प्रायः ऋषिकुलों, गुरुकुलों में शिक्षित लोगों ने ही भारतीय सभ्यता और संस्कृति के विकास में अग्रणी भूमिका का निर्वाह किया है। उनके लिए जीवन का चरम लक्ष्य था पुरुषार्थ-सिद्धि अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि। इन चारों शब्दों के सम्यक् अर्थापन से उद्घाटित होते हैं मनुष्य की मेधा, क्षमता और व्यक्तित्व के शत-सहस्र आयाम। शिक्षा के निरन्तर विकसित मानकों के बीच भारतीय मानव ने युग-युगांतर की यात्रा की और व्यक्तिगत जीवन के साथ अपने समाज, सभ्यता और संस्कृति को उत्कर्ष प्रदान किया। भारतीय शिक्षा-पद्धति की यह प्रविधि इतिहास के मध्यकाल तक प्रचलित रही है जबकि हमारे देश पर लगातार विदेशी आक्रमण होते रहे फिर भी हमारी शिक्षा के मानक नहीं बदले बल्कि उनमें युगानुकूल आवश्यक अध्ययन का समावेश कर लिया गया। भारत में ब्रिटिश उपनिवेश की स्थापना के बाद ईस्ट-इण्डिया-कम्पनी द्वारा जिस नयी शिक्षण-प्रणाली को लागू किया गया वह देश में ब्रिटिश-शासन को मजबूती प्रदान करने के लिए थी। इस प्रणाली ने नौकरी पेशा लोगों की जमात खड़ी कर दी जिसकी प्रतिक्रिया में भारत के मनीषी-विचारकों, शिक्षाविदों ने एक नये शैक्षणिक-तंत्र की रचना की। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, महात्मा ज्योतिबा फुले, महात्मा गाँधी, सैयद अहमद खाँ, महामना मदनमोहन मालवीय, रवीन्द्रनाथ ठाकुर आदि ने इस दिशा में पहल की जिससे समाज के एक बड़े वर्ग में आत्म-चेतना का विकास हुआ। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने शान्ति-निकेतन की परिकल्पना ऋषिकुल के अनुरूप ही की थी, जहाँ प्राकृतिक-परिवेश में छात्रों के व्यक्तित्व का समग्र विकास हो सके, शिक्षा के साथ-साथ उन्हें संवेदनशील बनाया जा सके जिससे जीवन में वे अपनी सार्थकता ही नहीं चरितार्थता सिद्ध कर सकें।

संयोग से इस दिशा में आज भी कुछ सचेतन शिक्षाविद् विचार कर रहे हैं और सम्भव है कि निकट भविष्य में इस तरह के परिवर्तन दिखलायी पड़ें। शिक्षित व्यक्ति की संवेदनशीलता और कल्पना-प्रवणता ही उसके व्यक्तित्व का विस्तार करती है, उसे सर्जनापरक बनाती है; वह कवि, संगीतकार, चित्रकार, मूर्तिकार और आविष्कारक बनता है। उसका जीवन पूर्णकाम और चरितार्थ होता है।

डरो मत, अरे अमृत संतान
अग्रसर है मंगलमय वृद्धि;
पूर्ण आकर्षण जीवन केन्द्र
खिंची आवेगी सकल समृद्धि।

सर्वेक्षण

कार्य-संस्कृति : हमारा देश आज भी 'सोने की चिड़िया' है। हमारे पास अकूत खनिज-भण्डार है, श्रमशक्ति है, हमारे खेत सोना उगलते हैं किन्तु सम्यक् योजना के अभाव में सूखा पड़ता है, किसान-मज़दूर आत्महत्या करते हैं और गरीब और गरीब होते जाते हैं। हम लोगों को विस्थापित करके बाँध बनाते हैं, कारखाने बनाते हैं किन्तु विस्थापितों के लिए पुनर्वास की कोई पहल नहीं करते। यह सब सरकारी स्तर पर होता है किन्तु व्यक्तिगत स्तर पर भी हम अपनी कार्यक्षमता का अवमूल्यन करते हैं, प्रतियोगिता में पिछड़ने पर अपनी कमियों का निरीक्षण करने और उन्हें दूर करने के बजाय हम निराश होते हैं या परिवेशगत परिस्थितियों को दोष देते हैं। अच्छा होगा कि हम स्वयं अपनी कार्य-क्षमता का आकलन करें और अपने काम को सिर्फ कमाई का ज़रिया न मानकर उसके प्रति निष्ठा, समर्पण एवं प्रतिबद्धता की भावना विकसित करें; तभी सिद्ध होगा हमारा राष्ट्रीय संकल्प और लहलहा उठेगी 'सोन-चिरैया', यह शस्य-श्यामल वसुंधरा....!

बरखा बहार : इस बार भी वर्षा ऋतु में बादल नदारद रहे। आषाढ़ का महीना वर्षा की प्रतीक्षा में बीत गया। सावन की शुरुआत में कुछ छींटे पड़े। प्यासी-धरती सिंच गयी, किसानों ने बीज डाले। मगर फिर सब कुछ ज्यों-का-त्यों। लगा कि कोई बादलों की तिजारत कर रहा है। आखिर केन्द्र और राज्य की सरकारों ने सूखे की घोषणा कर दी। सावन के तीसरे हफ्ते में फिर कुदरत मेहरबान हुई। उमस-भरी ज़िन्दगी पर कुछ छींटे पड़े, खेतों में सूखते बीज को पानी मिला और बस इतने से ही निहाल हो गये लोग। पेड़ों पर झूले पड़ गये, ढोलकों पर थाप पड़ी, कजरी के बोल गूँजने लगे—

आइल बरखा बहार
झूलना झूलै बदरवा हो३३३!

—परागकुमार मोदी

पृष्ठ 1 का शेष

व्याधि (पक्षाघात) को पछाड़कर आप पुनः अपने 'ऑफिस' पहुँच गये और सक्रिय हो गये। इसी बीच अकस्मात् एक दिन आपने बिना कुछ कहे अपनी इहलीला का संवरण कर लिया। शोक-विह्वल हो उठे हम सब। फिर आपकी स्मृति सहेज कर आपके द्वारा दिग्दर्शित मार्ग का अनुसरण करने लगे। आपकी 82वीं जन्मतिथि पर आपकी स्मृतियों की विरासत, हममें एक पूजनीय पुण्य-भाव का स्पंदन कर रही है। उसी पुण्यभाव के साथ आपके श्रीचरणों में प्रणाम करते हुए हम अर्पित कर रहे हैं अपने हृदय की श्रद्धास्पद भावांजलि...!

अमृत-पथ के आलोक आप
अक्षुण्ण आपका कीर्तिस्तम्भ।

अनुराग कुमार मोदी
पराग कुमार मोदी

संस्मरण

कविजी आओ घर चलें, रैन भई एहि देस

—पुरुषोत्तमदास मोदी

1945 की फरवरी की वह रात्रि आज भी नहीं भूलती जब गोरखपुर के सेंट एण्ड्रूज कॉलेज के मैदान में 25 हजार श्रोता रात 2 बजे तक कवियों को सुनने के लिए एकत्र थे। पं० माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्राकुमारी चौहान, शम्भूनाथ सिंह, धर्मवीर भारती, जगदीश गुप्त, गोपीकृष्ण गोपेश, सुमित्राकुमारी सिन्हा आदि प्रमुख कवियों को एकाग्र भाव से सुनते रहे। कवि सम्मेलन दो दिन चला। मैं बी०ए० का छात्र था। प्रो० राजनाथ पाण्डेय ने इस कवि सम्मेलन का आयोजन कराया था। मैं सक्रिय कार्यकर्ता था, यहीं मेरा सम्पर्क पं० माखनलाल चतुर्वेदी तथा अन्य साहित्यकारों से हुआ। परिचय ही नहीं प्रगाढ़ सम्बन्ध बना, साहित्य में रुचि जगी। मेरे जीवन की दिशा ही बदल गई।

1964 में मैं काशी आकर बस गया। रोटरी क्लब का सदस्य बना। 1970-71 में वाराणसी में रोटरी क्लब की ओर से नागरी नाटक मण्डली के प्रेक्षागृह में, बाद में टाउनहाल में कवि सम्मेलन का आयोजन किया। दोनों में 200 रुपये टिकट लगाई गई। कवि सम्मेलन में रामधारी सिंह 'दिनकर', जानकीवल्लभ शास्त्री, नागार्जुन, सुमित्रानन्दन पंत, महादेवी वर्मा प्रभृति सुप्रसिद्ध कवि आये।

प्रमुख स्थानीय कवि भी सम्मिलित हुए, शरद जोशी ऐसे व्यंग्यकार भी थे, जिन्होंने गद्य में व्यंग्य सुनाए। श्रोताओं ने आधी रात के बाद तक कवियों और व्यंग्यकारों को सुना और अपनी रचनात्मक प्रतिक्रिया भी व्यक्त की। कविताओं की रागात्मक संवेदना उनके मन को स्पर्श करती थीं और वे उन्हें गुनगुनाते भी थे।

आज के परिप्रेक्ष्य में यह सब स्मरण करता हूँ तो लगता है बीत गई सो बात गई।

टीवी युग ने कविताओं को अत्यन्त हल्के हास्य-व्यंग्य और चुटकुलों तक सीमित कर दिया है। अब न वे श्रोता हैं और न वे कवि। टीवी पर कवि सम्मेलन के नाम पर हास्य सम्मेलन कहिए, लाफ्टर शो कहिए या वाह वाह कीजिए। कवि **ज्ञानेन्द्रपति** ने टीवी युग में कवि की चर्चा करते हुए लिखा है—

नहीं, फासफोरस नहीं
बेचैनी नहीं, तड़प नहीं
संशय नहीं, सवाल नहीं
सुहाऊ और सुजाऊ
कवि टीवी युग के
आओ छाओ
चितवती जनता चेतेगी कैसे के
चित चुराऊ प्रोग्रामों में।

नई कविता के कवियों ने रागात्मकता के स्थान पर बौद्धिकता को स्वीकार किया, उनकी रचनाओं में बौद्धिक संवेदना की गहनता है किन्तु वे सामान्य श्रोताओं को लुभाती नहीं। आज के श्रोता भी उतने संवेदनशील नहीं। तभी कवि **केदारनाथ सिंह** 'मोड़ पर विदाई' देते हुए कहते हैं—

अब जाओ मेरी कविताओं
सामना करो तुम दुनिया का
यदि बजता है तो सिर्फ वहीं
यह इकतारा निर्गुनिया का।

कविवर हताश हैं। तीन दोहों में अपनी व्यथा व्यक्त करते हैं—

हैं अवाक् सब बोलियाँ, खुले होंठ निस्तब्ध
कवि जी पकड़ो ज़ोर से, उड़े जा रहे शब्द।
कलम छोड़ दो मेज़ पर, काग़ज़ रख दो द्वार
सारी दुनिया जा रही, कविजी चलो बज़ार।
श्रोता कब के उठ गए, पाठक चले विदेश
कवि जी आओ घर चलें, रैन भई एहि देस।

स्वयंप्रकाश कहते हैं—

''मेरी समझ से इसके लिए सबसे ज्यादा दोषी है आधुनिक हिन्दी कवियों का नकचढ़ापन, जिन्होंने जनता को कविता सुनाना घटिया काम समझ कर तीसरे चौथे दर्जे के कवियों के लिए मंच छोड़ दिया। उन्होंने हिन्दीभाषी जनता की परवाह नहीं की। वे जनता के लिए लिख ही नहीं रहे थे। वे पता नहीं किसके लिए लिख रहे थे। उन्होंने जनता की परवाह नहीं की तो जनता ने भी उन्हें अपने दिल से निकाल दिया। खराब मुद्रा ने अच्छी मुद्रा को चलन से बाहर कर दिया। पाठ्यक्रम—साहित्य प्रेम की नर्सरी हुआ करते थे, अच्छी और सच्ची कविता से खाली हो गए। क्या विडम्बना है कि हिन्दी का कवि हिन्दीभाषी जनता को अपनी कविता सुनाने से डरता है और यह हमारी भाषा की ही विडम्बना है। अन्य भारतीय भाषाओं में कवि सम्मेलन होते हैं, कवि कथन होते हैं, कवि दरबार और काव्य आवृत्ति प्रतियोगिता होती है- हिन्दी में एहसान कुरैशी होते हैं।''

देखना है—कब कवि को श्रोता मिलते हैं, कब श्रोता को कवि। कविता का भविष्य बतायेंगे पाठक या श्रोता।

फिलहाल—**कविजी आओ घर चलें, रैन भई एहि देस।**

—*'भारतीय वाङ्मय' जनवरी-फरवरी 2007 से*

पिछले अंक का शेष

पुस्तक-विलाप

—राजेन्द्र उपाध्याय, दिल्ली

हमारे सबसे बड़े एक लेखक ने अपने बेटे को तो
लेखक बनाया था
पर अपनी बेटी को अपनी एक भी किताब नहीं
पढ़ने दी।

दफ्तर से घर और घर से दफ्तर जाते आते हुए
बस में कोलकाता में जो दृश्य आम दिखता था
वह दिल्ली में कभी कभार ही दिखता है
कि आपकी बगल में बैठी हुई लड़की इस
बीसवीं सदी में
चौदहवीं सदी के किसी उपन्यास में खोई
हुई है।

यहाँ सुबह-सुबह मन्दिर/गुरुद्वारे जाती हुई माताएँ
जरूर
अपने हाथों में कुछ गुटके लिए हुए चलती हैं
शेष समाज मोबाइल पर सफलता का हिसाब-
किताब करता रहता है।

एक किताब हमारी जिन्दगी बदल देती थी
एक किताब हमारी जिन्दगी में बरसों बरस चली
आती थी
मायके से ससुराल आती थीं संदूक भर किताबें
रात-रात भर पढ़ी जाती थीं सिरहानें रहती थीं
गाँव से शहर और शहर से गाँव आवाजही करती
थीं।

गरीब से गरीब आदमी माँगकर ही सही
चुराकर ही सही किताब पढ़ता था।

अब कोई नहीं चुराता किताबें
अब कोई नहीं माँगता किताबें
अब कोई नहीं देता किताबें।

किताबें बचाने के लिए लोग नदी में कूद जाते थे
सबसे पहले बचाई जाती थीं किताबें
क्योंकि किताबें बचेंगी तो समाज बचेगा
अब सबसे पहले फेंकी जाती हैं किताबें
अब जलाई जाती हैं किताबें
उन्हें लिखने वालों के घर जलाये जाते हैं
उन्हें लिखने वालों पर फतवा जारी किया जाता है।
उन्हें देशनिकाला दे दिया जाता है।
किताबों के शत्रु समाज के शत्रु हैं देश के शत्रु हैं।

● वर्ष 1939 में अर्नेस्ट विंसेंट ने पाँच हजार वर्ड में 'गेड्सबाई' किताब लिखी थी। आश्चर्य की बात यह है कि इस किताब में एक बार भी 'e' वर्ड का इस्तेमाल नहीं किया गया है।

साहित्य की कसौटी

—एस. शंकर

दिल्ली की हिन्दी अकादमी में अशोक चक्रधर के उपाध्यक्ष बनने पर जो गम्भीर साहित्यकार शोकग्रस्त हैं उनकी गम्भीरता कई पहलुओं से संदेहास्पद है। वे अशोक चक्रधर को विदूषक कहकर मुँह बनाते हैं, जबकि खुद अपने मुँह मियाँ मिट्ठू हो रहे हैं। यदि इन स्व-घोषित गम्भीर साहित्यकारों की तुलना अशोक चक्रधर से करें तो विचित्र दृश्य बनता है। उन साहित्यकारों में से कई ऐसे हैं जिनके लेखन की कोई वास्तविक पूछ नहीं है। वे जिन छोटे-बड़े सरकारी या गैर-सरकारी पदों पर रहे हैं उन्हीं का उपयोग कर उन्होंने अपने को साहित्यकार घोषित कर लिया है। दूसरे प्रमाण भी हैं। उँगली उठाने वाले इन साहित्यकारों को अकादमिक पदों पर किसी नेता के भाई-भतीजे या पुलिस वालों की नियुक्ति से भी कभी परेशानी नहीं हुई। दिल्ली में ही दो महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय अकादमिक शैक्षिक संस्थानों के निदेशक पुलिस अफसर हैं। उनके अपने आधिकारिक परिचय में भी केवल उनके पुलिस कामों का विवरण मिलता है, जिसमें भी कोई विशिष्ट उपलब्धि नदारद है। इन पर हमारे स्वघोषित गम्भीर साहित्यकारों को आपत्ति नहीं। भाषा-साहित्य के नाम पर बने एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय के उपकुलपति भी पुलिस अफसर हैं।

> वे हास्य कविता और मंचीय कविता के जाने पहचाने नाम हैं। इसके अलावा दूरदर्शन पर भी वे लम्बे समय से नजर आते रहे हैं। व्यंग्य को कठिन साहित्य कर्म का दर्जा दिलाने वाले अशोक चक्रधर ने मुक्तिबोध पर शोध भी किया है। लेकिन दिल्ली की हिन्दी अकादमी के उपाध्यक्ष पद के लिए उनका नाम आने से साहित्यकार इतना भड़क उठे कि उन्हें विदूषक तक कह डाला। वैसे वे मॉइक्रोसॉफ्ट के यूनीकोड फॉन्ट 'मंगल' के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका भी निभा चुके हैं। इसके लिए उन्हें 'मोस्ट वैल्युएबल प्रोफेशनल एवार्ड' भी मिल चुका है।

वास्तविकता यह है कि ऐसे निदेशकों, उपकुलपतियों या स्व-घोषित गम्भीर साहित्यकारों को भी सामान्य शिक्षित वर्ग भी शायद ही जानता है। आम जनता तो बड़ी दूर की बात रही। उनकी तुलना में अशोक चक्रधर पूरे देश में जाना-माना नाम है। हर हाल में वे कवि के रूप में ही हरेक वर्ग में जाने जाते हैं। अनेक पुस्तकों के रचयिता होने के अतिरिक्त वे एक बड़े विश्वविद्यालय में हिन्दी साहित्य के प्रोफेसर भी रह चुके हैं। उनकी कविताएँ चाहे बच्चन या मिल्टन की श्रेणी की न हों, पर उनमें अनुभूति की मौलिकता, भाषा की शक्ति और सहज संप्रेषणीयता नि:सन्देह है।

आखिर साहित्यकार की पहचान क्या है? पन्ने काले करना साहित्य लेखन नहीं है, जो अपनी पीठ स्वयं थपथपाने वाले कर रहे हैं। महान लेखक लेव टाल्सटाय ने साहित्यिक अभिव्यक्ति की पहचान बताया था—**एक मनुष्य द्वारा अपनी अनुभूति की ऐसी मौलिक अभिव्यक्ति जो दूसरे मनुष्य को छू सके।** यह दो तत्व ही साहित्य की कसौटी हैं—**अनुभूति की मौलिकता और छूने का सामर्थ्य।** इस कसौटी पर हमारे कथित गम्भीर साहित्यकार पानी भरते नजर आएँगे। किसी सहृदय पाठक को छूना तो दूर, उनके लेखन का कोई पैराग्राफ पढ़ लेना भी दण्ड भोगने जैसा दूभर लगता है। दूसरी ओर मूर्धन्य व्यंग्य लेखक शरद जोशी के शब्दों में—''हजारों मोहित श्रोता अशोक चक्रधर के कविता पाठ के समय सहज मुस्कान से ठहाका लगाते हैं। उनकी कविता के दर्द को अपने अन्तर में अनुभव करते हैं, उसे जीते हैं। मैं जब उन्हें सुनता हूँ मुझे लगता है मैं गहरे सामाजिक यथार्थ से उभरा एक वृत्तचित्र देख रहा हूँ।'' यह गम्भीर टिप्पणी उन्होंने कम से कम अठारह वर्ष पहले की थी। जब से अशोकजी का साहित्यिक अवदान कई गुना हो चुका है। यदि जनता की भावना से जुड़ना और जनता की स्वीकृति को भी कसौटी मानें तब भी अशोक जी को ही जनवादी कहना होगा, जबकि स्वयं को जनवादी कहने वाले कथित साहित्यकारों को स्वयं जनता जानती तक नहीं।

यह अकारण नहीं है। ऐसे स्व-घोषित जनवादी चाहे बात जनता की करते हों, पर वास्तव में केवल अपनी हाँकते हैं। उन्हें वास्तविक जन भावनाओं से कोई लगाव नहीं होता। वे अबूझ विदेशी मुहावरे और जड़ फार्मूले रटते हैं। ऐसे स्व-घोषित साहित्यकारों, आलोचकों और अफसर-सह-लेखकों को केवल हिन्दी साहित्य के कुछ महत्वाकांक्षी छात्र ही जानते हैं। इसमें भी इन लेखकों की प्रतिभा से अधिक छात्रों की विवशता है। परीक्षा पास करने, उपाधि और सम्भव हो तो नौकरी पाने के लिए उन्हें इन लोगों को पढ़ना और दोहराना जरूरी होता है, क्योंकि सिलेबस बनाने, कोर्स में पुस्तकें लगवाने, उपाधियाँ देने और साक्षात्कार की प्रक्रिया के तंत्र पर ऐसे नकली साहित्यकारों का कब्जा है। कुछ मुट्ठीभर महानुभावों ने एक ऐसा अल्प तंत्र बनाया है जिसे शैक्षिक जगत में बहुत लोग जानते हैं।

यह अल्प तंत्र अक्षुण्ण रहे, कथित गम्भीर साहित्यकारों की असली चिन्ता यह है। कुल मिलाकर उस अल्प तंत्र की स्थाई चाह यह है कि यदि वे स्वयं सभी पदों पर काबिज न भी हो सकें तो कम से कम ऐसा व्यक्ति आए जो उनके कहने में रहे। यदि अकादमी का संचालक कोई समर्थ व्यक्ति हो तब उन्हें कठिनाई होगी। पूरे परिप्रेक्ष्य में सारी स्थिति परखें तो किसी थानेदार के बदले अशोक चक्रधर को हिन्दी अकादमी का कर्ता-धर्ता बनाने से उपजे क्षोभ का कारण कहीं और है। इसमें महत्त्वपूर्ण अकादमियों पर एक खास वामपंथी गुट का कब्जा बनाये रखने तथा एकाधिकारी प्रवचन चलाते रहने की मंशा है।

—'दैनिक जागरण' से साभार

मेरी अभी नियुक्ति ही हुई है कि हिन्दी के कुछ साहित्यकारों ने मेरे नाम पर विरोध शुरू कर दिया। मैंने अभी तक अकादमी की पहली मीटिंग तक नहीं की और मेरे बारे में कहा जाने लगा कि मैं हिन्दी साहित्य को बढ़ावा नहीं दूँगा। यह सब बातें वे किस आधार पर कह रहे हैं, मैं नहीं जानता। यह अकादमी हिन्दी साहित्य के लिए तो है ही हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार करने के लिए भी है। यह युवक-युवतियों को हिन्दी की टाइपिंग, शॉर्ट हैंड व कम्प्यूटर प्रशिक्षण देती है। कई पुस्तकालय संचालित करती है। हिन्दी के मेधावी छात्र-छात्राओं को सम्मानित करती है। इस अकादमी में हिन्दी साहित्य एक गतिविधि है, लेकिन यह मानना गलत होगा कि अकादमी केवल हिन्दी साहित्य के लिए ही है।

मैं अकादमी से पिछले लगभग पच्चीस साल से जुड़ा हूँ। मेरे पास जनता के प्यार की पूँजी है। मुख्यमंत्री को मुझ पर विश्वास है। वे अपने निर्णय पर कायम हैं और मैं भी अपनी जगह अडिग हूँ। मेरा हर प्रकार के साहित्यकार से अनुरोध है कि हिन्दी को एक वैश्विक ताकत बनाने में अकादमी की मदद करें। व्यक्तिगत या छिटपुट निन्दाओं से क्या हासिल होगा?

—अशोक चक्रधर

'हिन्दुस्तान' से साभार

हिन्दी तेरे रूप अनेक

—डॉ० माणिक मृगेश

कहावत है कि—

छह कोस पर पानी बदले, बारह कोस पर बानी।

यह कहावत हिन्दी पर ज्यादा लागू होती है, क्योंकि हिन्दी प्रान्तों की **राजभाषा** (प्रथम भाषा), भारत सरकार की **राजभाषा** और जन जन की **राष्ट्रभाषा** है। हिन्दी इतनी मिलनसार और उदार भाषा है कि जहाँ पहुँच जाती है वहाँ की आंचलिकता को ग्रहण कर वहीं की बन जाती है। कलकत्ता में कलकतिया हिन्दी पर बंगला का प्रभाव, हैदराबाद जाइए तो तेलुगु का प्रभाव। मुंबई जाइए तो मुंबइया हिन्दी की अपनी अलग ही शान है—'**काहे को लफड़ा करता**', गुजरात जाइए तो गुजराती का प्रभाव—**मोटी बेन आ साड़ी केटली सरस लाग छे!**

यह प्रभाव केवल हिन्दीतर भाषी प्रान्तों में ही नहीं है, हिन्दी के अपने प्रान्तों में भी है। कुछ शब्द दृष्टव्य हैं—

स्पष्ट, स्टेशन, स्कूल, मृगेश, हाथ, बढ़िया आदि।

ब्रज प्रदेश के लोग स्पष्ट को इस्पष्ट, स्टेशन को इस्टेशन और मृगेश को ब्रगेश उच्चारण करते हैं। बिहार के लोग स्पष्ट को अस्पष्ट (स्पष्ट का विलोम) हाथ को हाँथ, बढ़िया को बढ़ियाँ उच्चारण करते हैं। गुजरात, महाराष्ट्र, आँध्र आदि प्रदेशों में ऋ का उच्चारण रु के समान है। मृगेश को **मुर्गेश** उच्चारण करते हैं। मृगेश का अर्थ है मृग + ईश = मृगेश यानी कि शेर। गुजरात में मुर्गेश यानी कि मुर्गाओं का राजा। रसप्रद बात तो तब हुई जब मैं हरियाणा गया और वहाँ के एक हिन्दी अधिकारी ने कहा ''और भाई मरगेश अब कौन से विभाग'' में हैं। हरियाणा में स्पष्ट को सपष्ट, स्टेशन को सटेशन तथा प्रसाद को परसाद, तो वहीं गुजरात में स्टेशन को **टेशन** कहते हैं, उनका कहना है कि भाषा में टेंशन क्यों पाला जाए।

इसे बोली का या मातृभाषा का **व्याघात** कहा जाता है। 90 फीसदी लोगों की भाषा पर यह प्रभाव कभी न कभी दृष्टिगोचर हो ही जाता है। भाषा ध्वनि प्रतीकों की व्यवस्था है। अक्षर, जिसका क्षरण नहीं हुआ है, भाषा की सबसे छोटी इकाई है। एक या अधिक अक्षरों के मेल से शब्द बनते हैं। जैसे आ (आइए)। एक ध्वनि-**ख** (आकाश), दो ध्वनियाँ-ख् + अ। सार्थक ध्वनियों के समूह को शब्द कहा जाता है। जैसे **कमल** (पुष्प)। **मकल** कोई शब्द नहीं है क्योंकि निरर्थक है। शब्द का सही अर्थ वाक्य में प्रयुक्त होने के बाद प्रागमेटिक्स (प्रसंग) के आधार पर नियत होता है।

शब्द समाज द्वारा आपसी सहमति से बनाए जाते हैं, जैसे कमल, अगर भाषाई समाज कल से यह तय करें कि हिन्दी समाज **कमल** शब्द को **हाथी के रूप में पहचानेगा,** तो पहचानेगा, यानी कि भाषा एक समझौता है। शब्दों का निर्माण सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक आदि कई कारकों से होता है। सामाजिक तौर पर **चतुर्वेदी, चर्मकार, अध्यापक, स्वर्णकार, यादव, कंसल** आदि इसी तरह के शब्द हैं। चतुर्वेदी का अर्थ था—चारों वेदों का ज्ञाता। चर्मकार चमड़े का काम करने वाला। स्वर्णकार सोने का काम करने वाला, योद्धा से यादव बना। अब चतुर्वेदी का बेटा जिसने वेद आँखों से भी नहीं देखे वह भी चतुर्वेदी है और चर्मकार का पीएचडी बेटा भी पंडित नहीं बन पाया। यह शब्दों का अपकर्ष हुआ।

अब **हाथी** शब्द को लीजिए, हाथी को संस्कृत में **हस्ति** भी कहते हैं। वास्तव में यह शब्द **हस्तिन्मृग** यानी कि ऐसा मृग (जानवर) जिसके हाथ (सूँड़) हो, वह हस्तिन्मृग कहलाया। कालांतर में हस्तिन्मृग का लघुरूप **हस्ति** ही प्रचलन में आ गया। **सिंह** को संस्कृत में **हिंस्त्रक** कहते हैं यानी कि हिंसा करने वाला। पता नहीं कैसे हिंस्त्र शब्द सिंह में बदल गया। सिंह की मनोवृत्ति हिंसक तो होती ही है। लेकिन **साहित्यिक** सिंह की नहीं। जैसे कि अध्यापक का **झा,** चट्टोपाध्याय का **चटर्जी,** बहू दीदी का **बऊदी** (बंगाल में)। शब्दों के पीछे एक इतिहास भी रहता है, जैसे वडोदरा इसलिए पड़ा कि वहाँ वटवृक्षों की बहुतायत है—(वट + उदरा)। गोधरा में गाएँ ज्यादा थीं। ध्रांगध्रा + ध्रा = चट्टानों वाली धरा। महेषाणा (महिष = भैसों की बहुतायत)। भारत की प्रथम दूध डेयरी महेषाणा में ही लगाई गई थी। **दाहोद** मूल शब्द था—**दोहद** यानी कि गुजरात व मध्य प्रदेश की हदें मिलती थीं। अपभ्रंश होते होते **दाहोद** हो गया।

कुछ शब्द कॉमन होते हैं, जो थोड़े बहुत अंतर के साथ-साथ पूरे देश में प्रयुक्त होते हैं, जैसे शब्द है **कुमारी** (ब्रज कुमारी), कुमारी शब्द पंजाब में कौर बन गया (हरविंदर कौर), राजस्थान में **कुँअरि** (रूप कुँअरि) बन गया।

हिन्दी की क्रिया '**है**' गुजराती में '**छे**' हो जाती है। हरियाणा में '**सै**' हो जाती है।

शब्दों के अर्थ प्रसंग के अनुसार बदल जाते हैं। शब्दों में खुशबू होती है, दुर्गंध के दु में बास का आभास होता है तो खुशबू के श में सुवास है। शब्द ही नहीं ध्वनियों में भी विविध रस होते हैं। 'क' में कर्कशता है तो 'ख' में खरापन है। 'ग' में गमन का भाव है तो 'घ' में घमंड का।

घन घमंड गरजत घन घोरा।
पिया हीन कांपत मन मोरा॥

'च' में चंचलता है, **चारु चंद्र की चंचल किरणें फैल रही हैं जल थल में।** 'छ' में छरछराहट है, 'प' में पवित्रता है—''**पानी परात को हाथ छुऔ नहीं, नैंनन के जल सौं पग धोए**''। 'श' में शीतलता है, 'म' में ममता है। **मैया कबहिं बढ़ैगी चोटी।**

तात्पर्य यह है कि शब्द बोलते हैं। शब्दों में गंध होती है। शब्दों में सुगंध होती है। इसके अतिरिक्त, शब्द देश, काल, समाज परिस्थितियों के अनुरूप अपने अर्थ बदलते रहते हैं। बिहारी के शब्दों में, हिन्दी के रूप अनेक हैं।

मैं समुझ्यो निरधार यह जग, काँचों काँच सो,
एकहिं रूप अपार प्रतिबिंबित लखियतु जहाँ।

असली संजीवनी बूटी ज्ञान है

—शिवकुमार गोयल

बुर्जुए ईरान के सम्राट के मन्त्री थे। वह अध्यनशील तथा परोपकारी स्वभाव के थे। सेवा और सहायता के लिए वह हर क्षण तत्पर रहा करते थे। एक बार उन्होंने किसी से सुना कि भारत के किसी पर्वत पर संजीवनी बूटी मिलती है, जिसके सेवन से बड़े से बड़ा रोग दूर हो जाता है। बुर्जुए संजीवनी की खोज में ईरान से भारत पहुँचे। वह पर्वतीय क्षेत्रों में भटकते रहे, किन्तु यह पता नहीं कर पाए कि संजीवनी बूटी कौन-से पर्वत पर मिल सकती है। एक दिन बुर्जुए एक भारतीय विद्वान के पास पहुँचे। उन्होंने उनसे पूछा, ''पंडित प्रवर, मैं उस अनूठी औषधि की खोज में ईरान से यहाँ आया हूँ, जिसके प्रयोग से आदमी भला-चंगा हो जाता है। वह औषधि किस पर्वत पर मिलेगी?'' पण्डित ने कहा, ''विद्वान व्यक्ति ही वह पर्वत है, जहाँ ज्ञान की बूटी होती है। उसके सेवन से निराश व अज्ञानी व्यक्ति में नवजीवन का संचार हो जाता है।''

बुर्जुए ने विनम्रता से पूछा, ''ज्ञान रूपी वह बूटी मुझे कहाँ से प्राप्त होगी?'' पण्डित ने कहा, ''पंचतंत्र ऐसा ग्रन्थ है, जो निराशा व अज्ञान को काफूर करने की क्षमता रखता है। उसकी कहानियाँ अत्यन्त शिक्षाप्रद होती हैं।'' बुर्जुए पंचतंत्र ग्रन्थ लेकर ईरान लौटा। उसने पहलवी भाषा में उसका अनुवाद कराया। विष्णु शर्मा द्वारा लिखित पंचतंत्र का वह पहला विदेशी भाषा में अनुवाद था, जो कलेलाह व दिमजाह नाम से प्रकाशित हुआ।

राजनैतिक दासता की अपेक्षा सांस्कृतिक दासता खतरनाक है। **—डॉ० दाशरथि रंगाचार्य**

द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण' का सम्पूर्ण साहित्य **निर्गुण रचनावली** से एक कहानी के कुछ अंश....

सौदामिनी

सौदामिनी दर्पण सामने रखकर बालों में कंघी कर रही थी। दर्पण में अपना चेहरा देखते-देखते उसे एकाएक भ्रम हुआ कि चेहरे पर कहीं-कहीं बहुत ही हलकी झुर्रियाँ पड़ गई हैं। जरा और देखने पर सौदामिनी का हृदय 'धक्' से हो गया। सचमुच ही झुर्रियाँ पड़ गई थीं; पर वे बहुत अस्पष्ट थीं। सौदामिनी ने दोनों हाथों से अपने मुँह को कुछ देर तक मलकर फिर देखा—झुर्रियाँ मिट गईं, कपोलों पर सुन्दर गुलाबी रंग झलक आया। तब अनमनी-सी होकर उसने अपने बाल बाँधे, फिर घर के काम-काज में लग गई।

सवा-चार बजे स्वामी थके-थकाये दफ्तर से लौटते हैं। हाथ-पैर धुलाकर सौदामिनी ने उनके सामने नाश्ता लाकर रख दिया और स्वयं सामने कुर्सी पर बैठ गई। नाश्ता खाते-खाते वे बीच ही में हमेशा एक-आध बात सौदामिनी नीची आँखें किये 'हाँ-हूँ' करने लगी। आज अचानक उसका इस तरह अनमना होना उन्हें अच्छा नहीं लगा। दफ्तर में पूरे छः घंटे काम करने के बाद, घर लौटने पर क्या दो-चार प्रसन्नता की बातें भी वह उनसे नहीं कर सकता? इस बीच में एक बार उन्होंने पूछना भी चाहा कि 'क्या बात है?' पर सौदामिनी की ओर देखा, तो वह जमीन पर आँखें गड़ाये बैठी थी। तब बिना और कुछ कहे, नाश्ता खाकर वे बाहर चले गये। सौदामिनी ने धीरे से एक साँस ली।

फिर शाम के भोजन की तैयारी करने के लिए जाते-जाते उसने एक बार और दर्पण उठाकर देखा। सामने की खिड़की से आता हुआ, उस पार डूबते सूर्य का सुनहरा आलोक चेहरे पर छा गया। उस आलोक में अपना सौन्दर्य देख कर सौदामिनी को जैसे थोड़ा सन्तोष मिला।

❑ ❑ ❑

दूसरे दिन जब इन्दुभूषण खाना खाकर दफ्तर जाने लगे, तो नित्य की तरह उन्हें पान बनाकर देती-देती वह बोली—''तुम्हारे मित्र का वह लड़का कब आयेगा? कॉलेज खुलने के दिन तो शायद आ गये।''

हाथ से पान लेकर, उसकी ओर देख कर स्वामी ने कहा—''आजकल में आ ही जायगा। उसके रहने के लिए, तुम आज ऊपरवाला कमरा ठीक करा देना।''

पति को अपनी ओर इस तरह ताकते देख कर सौदामिनी किसी आशंका से सिहर उठी। देखा, पति की दृष्टि में एक प्रकार की उपेक्षा-विरक्ति झाँक रही है; उस दृष्टि से प्रेम का—आकर्षण का कहीं चिह्न भी नहीं है मानो वे बहुत दिनों से देखते आ रहे हैं कि अब सौदामिनी का यौवन और सौन्दर्य दोपहर के उधर पहुँचने लगा है! भय और ग्लानि से सौदामिनी पीली पड़ गई; आँखें नीची करके वह दूसरी ओर चली गई।....

वही हुआ। दो दिन बीते। स्वामी के मित्र का लड़का उसके घर आ गया। वह अपने छोटे-से शहर के स्कूल में पढ़ता था। मैट्रिक पास करके, अब इण्टर में पढ़ने के लिए यहाँ आया है। उसका नाम शचीन्द्र है। वह खूब भावुक है, सौन्दर्य से उसे खूब प्रेम है। तरह-तरह की मनोहर कल्पनाओं में और रंगीन स्वप्नों में वह दिन-रात डूबा रहता है। उसने अनेक उपन्यास पढ़े हैं, ढेरों कहानियाँ पढ़ी हैं; जीवन को उपन्यासमय देखता है। फिर भी वह मात्र कल्पना है। नारी का सौन्दर्य, प्रेमोन्माद, विरह, शोकोच्छ्वास—यह सब उसके निकट रहस्यपूर्ण और उत्कट आकांक्षा की बातें हैं। वह अत्यन्त सरल और सुकुमार हृदय का, अनुभवहीन अल्हड़ नवयुवक है।

सौदामिनी के सामने आकर वह लज्जा से संकोच से विजड़ित हो उठा। घर पर केवल अपनी माँ और बहन के पास रहा है। अब यहाँ आने पर, इस अपरिचित नारी से साक्षात् होने पर, वह घबरा-सा गया। एक बार भी आँखें उठाकर सौदामिनी की ओर नहीं देख सका!

सौदामिनी ने उसकी यह दशा देखी, तो कौतुक से मुस्कुराती हुई बोली—''शरमाते क्यों हो? हम तो कोई गैर नहीं, यह घर भी तुम्हारा ही है। चलो ऊपर तुम्हारा कमरा दिखाऊँ।''

अस्पष्ट स्वर में न जाने क्या कहकर शचीन्द्र उसके पीछे-पीछे चला गया।

❑ ❑ ❑

दिन कटे, तो वह संकोच भी कटा। पहले शचीन्द्र खाना खाते समय कभी सिर उठाकर बात नहीं कर सकता था। अब कभी-कभी बात करते-करते सौदामिनी की ओर देखने लगता है। पर आँखें मिलते ही फिर नजर नीचे कर लेता है। देखकर सौदामिनी मन-ही-मन मुस्कुराती है। सौदामिनी देख पा रही है, शचीन्द्र की दृष्टि में शून्यता नहीं है। यह लज्जा और संकोच किस कारण है, यह भी वह देख पाती है। विधाता ने प्रारम्भ से ही नारी को पुरुष के अन्तरतम भावों को परखने की शक्ति दी है। उसी दैवी शक्ति के सहारे सौदामिनी सहज़ हीजान सकी है कि उसके पति के देहाती मित्र का यह सीधा-सादा लड़का अभी अछूता फूल है, पर वैसा भोला नहीं है। प्रेम के समुद्र के किनारे तक अभी नहीं पहुँचा है; पर उसमें कूद कर निमग्न हो जाने के लिए इस नवयुवक का हृदय जाने कितना उत्कण्ठित है।....

इन्दुभूषण के दफ्तर की छुट्टी थी। इसी छुट्टी में एक रिश्तेदार की शादी में जाना था, सो चले गये। दिन काम-धाम में बीत गया। रात को रोखी खा-पीकर सौदामिनी कमरे की खिड़की के पास पलंग पर अकेली लेटी, पंखा डुलाती, कुछ सोच रही थी। सोच रही थी कि अभी गरमी पड़ रही है, इसके बाद बरसात आयेगी, फिर जाड़ा शुरू हो जायेगा, और अगले वर्ष को इन्हीं दिनों में फिर गरमी आ जायगी! उसकी आँखों के सामने से कितनी गरमियाँ, कितनी बरसातें और कितने जाड़े इसी तरह निकल गये हैं!....

सहसा आँगन में कोई आहट पा कर, मुँह उठाकर खिड़की से देखने लगी तो शचीन्द्र को खड़ा पाया। सौदामिनी अचरज में आकर निहारती रह गई। शचीन्द्र ने एक बार चारों ओर आँखें उठा करके कुछ देखा, फिर मन्थर गति से लौटने लगा। सौदामिनी स्तब्ध होकर लक्ष्य करती रही; शचीन्द्र जीने तक आया, वहाँ पहली सीढ़ी पर फिर रुक-रुककर ऊपर चला गया।

क्या बात है? सौदामिनी सोचने लगी कि आज तक कभी भी इस तरह नहीं हुआ था; आज अचानक रात में इस तरह आकर शचीन्द्र क्यों लौट गया?....

तड़के-तड़के सौदामिनी ऊपर शचीन्द्र के कमरे में आ खड़ी हुई। फिर निश्चिन्तता से सामने की कुरसी पर बैठ गई। उसके इस तरह से आ बैठने से तनिक चौंक कर शचीन्द्र चुप रह गया और अपनी किताब के पन्ने लौटता रहा। सौदामिनी के मन में रात की बात घूम रही थी, पर वह जाने क्यों उस बात को पूछ नहीं सकी। बैठी-बैठी सामने दीवार पर टँगे कलेण्डर की ओर थोड़ी देर तक ताककर, हँसकर पूछने लगी—''अभी क्या तुम्हारी कोई परीक्षा जल्दी होनेवाली है?''

शचीन्द्र ने कहा—''परीक्षा अभी नहीं होगी।''

''शायद आजकल तुम्हें बहुत पढ़ना होता है।''

शचीन्द्र ने एक बार मुँह उठाकर उसकी ओर देखा।.....

विस्तृत अध्ययन हेतु पढ़ें—

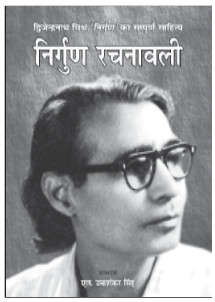

निर्गुण रचनावली

[छः खण्डों में]

द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण'

81-7124-478-5

मूल्य :

सजिल्द रु० 3000.00 अजिल्द रु० 1800.00

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

अत्र-तत्र-सर्वत्र

मंदी में भी गीता प्रेस ने स्थापित किये नए कीर्तिमान

गोरखपुर। पूर्वी उत्तर प्रदेश के गोरखपुर शहर के शेखपुर इलाके की एक इमारत में पुस्तकों के सम्पादन और छपाई के काम में लगे कर्मचारियों के लिए वैश्विक आर्थिक मंदी की चर्चा दूर के शोर से अधिक और कुछ नहीं है। करीब 200 कर्मचारियों के साथ धार्मिक पुस्तकों के प्रकाशन और मुद्रण का काम कर रही विख्यात गीता प्रेस, गोरखपुर के कामकाज पर वैश्विक मंदी का कोई असर नहीं है। देश-दुनिया में हिन्दी, संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं में प्रकाशित धार्मिक पुस्तकों, ग्रन्थों और पत्र-पत्रिकाओं की बिक्री कर रही गीता प्रेस को भारत में घर-घर में रामचरित मानस और भगवद्गीता को पहुँचाने का श्रेय जाता है।

मनपसंद किताब महज एक क्लिक पर

अब वे दिन दूर नहीं, जब आप अपनी मनपसंद किताब को महज एक क्लिक के माध्यम से प्राप्त कर सकेंगे। जितनी देर में आप कॉफी मशीन निकालते हैं, उतने ही समय में आप इस मशीन की सहायता से किताब को प्रिंट कर पाएंगे। यह तकनीक बुक चेन, ब्लैकवेल ने लंदन में लांच की है।

यह मशीन उन लोगों के लिए काफी मददगार होगी जो किताबें पढ़ने के शौकीन होते हैं। साथ ही कुछ विशेष किताबों में लेकर वह खासे परेशान रहते हैं। इस बुक मशीन की मदद से आउट ऑफ प्रिंट किताबें भी मिनटों में हासिल हो सकेंगी।

एस्प्रेसी बुक मशीन (ईवीएम) नए लेखकों के लिए भी काफी मददगार होगी। बस उन्हें लिखी गई किताब की सीडी दुकान पर ले जानी होगी, चंद मिनटों में ही उन्हें प्रोफेशनली प्रिंटेड किताब मिल जाएगी। यह मशीन एक मिनट में 105 पन्ने प्रिंट करेगी और एक किताब को प्रिंट करने में इसे पाँच मिनट लगेगा। अगर स्टॉक में किताब मौजूद होगी, तो इसके प्रिंट की कीमत, किताब की कीमत जितनी होगी। वर्तमान में इसमें चार लाख किताबें डाउनलोड करने के लिए मौजूद हैं। इस बात की उम्मीद की जा रही है कि आने वाले एक-दो महीनों में इसमें दस लाख किताबें उपलब्ध होंगी। इस मशीन में आपको कैटेलॉग को ब्राउज करना होगा। और 'मेक बुक' प्रेस करना होगा और आपकी किताब बन जाएगी। पहले कवर पेज बनेगा, इसके बाद पेज प्रिंट होंगे और वह अपने आप किताब की शक्ल में एकत्रित हो जाएँगे। आप मशीन के लेटरबॉक्स से पाँच मिनट बाद पूरी तरह तैयार किताब निकाल सकते हैं।

विदेशी गुरुओं पर भारी पड़ रहे हैं देसी मैनेजमेंट गुरु

आज प्रतियोगिता का दौर है। पुस्तक प्रेमियों में मैनेजमेंट की पुस्तकों के प्रति गहरी दिलचस्पी है। वह सफलता के लिए इन पुस्तकों को पढ़ना और उसे अपने जीवन का हिस्सा बनाना चाहते हैं। मैनेजमेंट व सफल प्रबन्धन के नुस्खे वाली पुस्तकें पाठकों को अपनी ओर खींच रही हैं। देसी मैनेजमेंट गुरु, विदेशी गुरुओं पर भारी पड़ रहे हैं। भारतीय परम्परा, चिंतन और पौराणिक आख्यानों, लोक कथाओं, जातक कथाओं के सहारे प्रबन्धन के सूत्रों को प्रस्तुत करने के कारण ऐसी पुस्तकें लोकप्रिय हैं। इन पुस्तकों में बात को लम्बे-चौड़े आख्यानों-व्याख्यानों की जटिलताओं में न उलझाकर छोटे-सटीक और सरल-सहज वाक्यों में उदाहरणों के माध्यम से समझाया गया है।

खलनायक ही नहीं है सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट्स

फेसबुक, ऑर्कुट, माईस्पेस जैसी सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट्स भारतीय युवाओं के लिए नई नहीं हैं, लेकिन यहाँ एक बड़ा वर्ग इनको खलनायक के नजरिए से देखता आया है। इन वेबसाइट्स का दूसरा पहलू भी है, जिस ओर बहुत कम लोगों का ध्यान जा पाता है।

ऐसा ही एक किस्सा है अमेरिका और ब्रिटेन से। एक ब्रिटिश लड़के की दोस्ती फेसबुक के जरिए एक अमेरिकी लड़की से हो गई। एक दिन लड़के ने चैटिंग के दौरान लड़की को बताया कि वह खुदकुशी करने जा रहा है। लड़की ने अपनी माँ को यह बात बताई। मामला पुलिस में गया। अमेरिकी पुलिस ने तुरन्त कार्रवाई करते हुए मामला व्हाइट हाउस पहुँचाया और फिर ब्रिटिश दूतावास तक बात पहुँची। ब्रिटिश दूतावास ने स्थानीय पुलिस को जानकारी दी और लड़के के घर तक पुलिस पहुँच गई। जब पुलिस उसके घर पहुँची तो लड़का दवाओं की अत्यधिक खुराक लेकर बेसुध पड़ा था। उसे अस्पताल पहुँचाया गया और इलाज के बाद वह बिल्कुल ठीक हो गया।

यह इकलौता उदाहरण नहीं है। ग्लोबल मंदी के दौर में जब बड़े पैमाने पर लोगों की नौकरियाँ जा रही हैं और वे भारी तनाव का सामना कर रहे हैं, सोशल नेटवर्किंग वेबसाइटें संजीवनी का काम कर रही हैं। बेरोजगार न सिर्फ इन पर आस में एक-दूसरे की दुश्वारियाँ बाँट रहे हैं, बल्कि रोजगार के नए अवसर भी मुहैया करा रहे हैं। सोशल सर्कल और दोस्ती बढ़ाने से शुरू हई यह वेबसाइटें अब जॉब पोर्टल का काम भी कर रही हैं। दोस्ती, प्रेम, शादी से लेकर कारोबार तक, तमाम विकल्प उपलब्ध हैं सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट्स पर।

सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट्स के इस बढ़ते नेटवर्क पर एक नामी आईटी कम्पनी के प्रमुख कहते हैं, ''टेक्नोलॉजी को आप रोक नहीं सकते और न रोकना चाहिए।'' वह सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट्स की तुलना टीवी से करते हुए कहते हैं, ''जिस वक्त टीवी शुरू हुआ, गिने-चुने चैनल और कार्यक्रम थे, लेकिन आज सैकड़ों विकल्प हैं। ऐसे में आप क्या चुनते हैं, यह आप पर निर्भर करता है। इसी तरह सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट्स की भी बाढ़ आ गयी है। लेकिन इनका इस्तेमाल आप अपने फायदे के लिए किस तरह करते हैं, यह आप पर निर्भर करता है।'' वे यह भी जोड़ते हैं, ''हर चीज के अपने खतरे हैं और फायदे भी। ऐसे में सर्तक रहना भी जरूरी है।''

क्रेजी किया रे—भारत में इंटरनेट उपभोक्ताओं की संख्या दुनिया में सबसे तेज गति से बढ़ रही है और यह 1 करोड़ 80 लाख से भी ज्यादा हो गई है। इस मामले मे भारत एक पायदान चढ़कर अब दुनिया में नौवें स्थान पर आ गया है।

आर्कुट की कहानी—आर्कुट बायोक्टेन नाम का शख्स अपनी उस गर्लफ्रेंड को खोजना चाहता था, जो स्कूली दिनों में ही उससे बिछुड़ गई थी। यह काम आसान नहीं था, लेकिन बायोक्टेन भी निराश नहीं हुए। वह तरह-तरह की परिकल्पनाएँ करते। जब बायोक्टेन 20 साल के हुए और आईटी के टेक्निकल आर्किटेक्ट बन गए तब उनके दिमाग में एक आइडिया आया। उन्होंने कम्प्यूटर इंजीनियरों से एक ऐसा सॉफ्टवेयर तैयार करने को कहा, जिसके जरिए मैसेज भेजे जा सकें। और दूसरा भी उस पर अपना मैसेज लिख सके। सोशल नेटवर्किंग की भाषा में इसी को 'स्क्रैप' करना कहा जाता है। यह आइडिया रंग लाया और तीन साल की मशक्कत के बाद बायोक्टेन को अपनी खोई हुई गर्लफ्रेंड मिल गई। इस सॉफ्टवेयर का मिशन पूरा हो गया तो बायोक्टेन ने इसे बंद करना चाहा, लेकिन आईटी में पाँव पसार चुकी कम्पनी गूगल को यह आइडिया पसंद आया और उसने वर्ष 2004 में इस सॉफ्टवेयर को खरीद लिया।

फेसबुक का फसाना—हॉर्वर्ड कॉलेज में कम्प्यूटर साइंस के छात्र मार्क जुकेरबर्ग ने 4 फरवरी 2004 को फेसबुक की स्थापना की। मकसद यह था कि वे लोग कॉलेज के बाकी छात्रों से जुड़े रह सकें। सितम्बर 2006 में जुकेरबर्ग ने इसका दरवाजा पूरी दुनिया के लिए खोल दिया। यहीं से सफलता की जो सीढ़ियाँ फेसबुक ने चढ़ीं तो आर्कुट को भी पीछे धकेल दिया और माईस्पेस को कड़ी चुनौती दे दी। आज की तारीख में सबसे ज्यादा सदस्य फेसबुक के पास हैं और सबसे ज्यादा पेज उसी के खोले जाते हैं। कमाई में भी वह नम्बर वन है। सोशल नेटवर्किंग की दुनिया में इन दो बड़े नामों के अलावा और भी कई लोकप्रिय वेबसाइट्स हैं मसलन, मॉईस्पेस, हाय-5, फ्रेंडस्टर, ट्विटर आदि। बाजार में अब वही सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट टिक पा रही है, जिसके पास लीक से हटकर कुछ होता है।

सम्मान-पुरस्कार

संस्कृत के उद्भट विद्वानों को करपात्री स्वामी सम्मान

वाराणसी। दुर्गाकुण्ड स्थित धर्मसंघ शिक्षा मण्डल में धर्मसम्राट स्वामी करपात्री महाराज के 103वें प्राकट्योत्सव के तहत 23 जुलाई को सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व प्रति कुलपति **प्रो० शिवजी उपाध्याय** को 'करपात्र रत्न' व **पं० दिवाकर शास्त्री** को 'करपात्र गौरव' सम्मान दिया गया।

दोनों विद्वानों को धर्मसंघ शिक्षा मण्डल की ओर से पीठाधीश्वर स्वामी शंकरदेव चैतन्य ब्रह्मचारी ने सम्मानित किया। 'करपात्र रत्न' के तहत **एक लाख** तथा 'करपात्र गौरव' के तहत **ग्यारह हजार** की सम्मान राशि दी गई। मुख्य अतिथि स्वामी कपिलेश्वरानंद सरस्वती ने कहा कि स्वामी करपात्री महाराज असाधारण प्रतिभा के धनी व साक्षात महामानव थे। उनके नाम से दिया जाने वाला यह गौरव सदैव प्रेरणा देता रहेगा।

नगवा स्थित विद्या साधना पीठ में आगम के प्रसिद्ध विद्वान **प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी** को **51 हजार** का 'करपात्री स्वामी स्मृति सम्मान' प्रदान किया गया। इसके अलावा **प्रो० रेवाप्रसाद द्विवेदी** को उनकी पुस्तक 'हरिहरावदान काव्यम्' पर व श्री विद्योपासिका डॉ० सुनीता शास्त्री को **11-11 हजार** का पुरस्कार प्रदान किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो० आद्याप्रसाद मिश्र ने की। विशिष्ट अतिथि डॉ० रीताकुमार थीं। अभ्यागतों का स्वागत पीठ के अध्यक्ष दत्तात्रेयानंदनाथ ने किया।

अशोक चक्रधर हिन्दी अकादमी, दिल्ली के नए उपाध्यक्ष

नई दिल्ली, कई राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित, जाने माने कवि, आलोचक, प्राध्यापक और फिल्मकार प्रो० अशोक चक्रधर हिन्दी अकादमी, दिल्ली के नए उपाध्यक्ष होंगे। इसके साथ ही अकादमी की अध्यक्ष और मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित ने अकादमी की नई संचालन समिति जिसका कार्यकाल 2 वर्ष का होगा, की घोषणा भी कर दी है।

24 सदस्यीय समिति में—डॉ० नित्यानंद तिवारी, श्री सुरेन्द्र शर्मा, डॉ० अर्चना वर्मा, डॉ० विश्वनाथ त्रिपाठी, श्री अजीत कुमार, श्री हिमांशु जोशी, श्री भानु भारती, श्री अमरनाथ 'अमर', डॉ० एच० बालासुब्रह्मण्यम्, सुश्री मीरा कान्त, श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी, श्री अनवर जमाल, श्री लीलाधर मंडलोई, श्री विभास चन्द्र वर्मा, डॉ० प्रेम सिंह, डॉ० सत्येन्द्र कुमार तनेजा, श्रीमती सविता असीम, डॉ० भगवान दास मोरवाल और श्री गोरखनाथ सम्मिलित हैं।

प्रो० अशोक चक्रधर पिछले उपाध्यक्ष डॉ० मुकुन्द द्विवेदी का स्थान लेंगे। 2 फरवरी 1951 को खुर्जा (उत्तर प्रदेश) में जन्मे श्री चक्रधर को 'मुक्तिबोध की काव्य प्रक्रिया' पर पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त है। हिन्दी के लोकप्रिय कवि के रूप में देश-विदेश में प्रसिद्ध श्री चक्रधर ने वर्षों तक जामिया मिलिया इस्लामिया के हिन्दी विभाग में अध्यापन कार्य भी किया है। उन्होंने प्रौढ़ एवं नव साक्षरों के लिए विपुल लेखन, नाटक, अनुवाद, कई चर्चित धारावाहिकों, वृत्त-चित्रों का लेखन-निर्देशन करने के अलावा कम्प्यूटर में हिन्दी के प्रयोग को लेकर भी महत्त्वपूर्ण काम किया है।

श्यामसुन्दर सुमन को दीपशिखा सम्मान

भीलवाड़ा, दीपशिखा साहित्य एवं सांस्कृतिक मंच ज्ञानोदय अकादमी, हरिद्वार द्वारा सामयिकी साहित्य संवाद के सम्पादक **श्यामसुन्दर सुमन** को 'दीपशिखा सम्मान' प्रदान कर सम्मानित किया गया। दीपशिखा मंच के संस्थापक अध्यक्ष के०एल० दिवान ने सुमन की निष्काम सेवा की प्रशंसा करते हुए कहा कि सुमन ने साहित्य सृजन कर साहित्य जगत में विशेष पहचान बनाई है।

डॉ० तिप्पेस्वामीजी को द्विवागीश पुरस्कार

मैसूर विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष, हिन्दी और कन्नड के प्रतिष्ठित लेखक एवं श्रेष्ठ अनुवादक **डॉ० तिप्पेस्वामीजी** को नई दिल्ली के भारतीय अनुवाद परिषद ने कन्नड और हिन्दी अनुवाद क्षेत्र में डॉ० तिप्पेस्वामीजी के महत्त्वपूर्ण योगदान और उनकी आजीवन साधना के लिए प्रतिष्ठित 'द्विवागीश पुरस्कार' प्रदान किया है। इस पुरस्कार के अन्तर्गत 11,000 रु० की राशि, शॉल, प्रशस्तिपत्र, सारस्वत प्रतिमा तथा अविस्मरणीय सम्मान सम्मिलित हैं।

लखनऊ में ओड़िया कवि डॉ० कृपासिंधु नायक एवं डॉ० अर्जुन शतपथी को सारस्वत सम्मान

लखनऊ में अखिल भारतीय राष्ट्र भाषा विकास संगठन, गाजियाबाद द्वारा उत्तर प्रदेश साहित्य संस्थान, यशपाल सभागार में आयोजित एक विशेष सारस्वत सम्मान समारोह में **डॉ० अर्जुन शतपथी** को उनकी 'आर्यपुत्र' उपन्यास कृति के लिए वरिष्ठ कथा गौरव एवं डॉ० कृपासिंधु नायक को उनकी काव्य कृति 'विखण्डित समय' के लिए कवि गौरव सम्मान से अंग वस्त्र, पुरस्कार राशि और प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए नवाजा गया। उक्त समारोह में प्रख्यात साहित्यकार तथा पूर्व सांसद डॉ० रत्नाकर पाण्डेय ने अध्यक्षता की। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ० शंभुनाथ मुख्य अतिथि और उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान के अध्यक्ष डॉ० गोपाल चतुर्वेदी सम्मानित अतिथि थे।

कमलेश्वर स्मृति पुरस्कार समारोह

आगरा में प्रख्यात कथाशिल्पी कमलेश्वर की स्मृति में 'समानान्तर' द्वारा अखिल भारतीय कहानी प्रतियोगिता में प्रतिभागी 30 कहानियों में **श्री ओमप्रकाश अवस्थी** (बहराइच-प्रबन्धक एसबीआई) की कहानी 'कसाईबाड़े और भी हैं' को प्रथम पुरस्कार 5100 रु०, शॉल, प्रशस्तिपत्र एवं **श्री मनोज श्रीवास्तव** (बलरामपुर प्रबन्धक ओबीसी) की कहानी 'रिटायरमेंट' को 3100 रु०, शॉल, व प्रशस्तिपत्र ससम्मान भेंट किये गये। अध्यक्ष कविवर सोम ठाकुर ने आगरा के साहित्यकारों से अपेक्षा की कि वे साहित्य की समस्त विधाओं में समसामयिक स्तरीय रचनाओं का सृजन करें। मुख्य अतिथि श्री शत्रुघ्न लाल ने 'समानान्तर संस्था' के इस कदम की सराहना की।

तैलंग को मीरा सम्मान

इलाहाबाद के मीरा फाउंडेशन द्वारा इस वर्ष का मीरा स्मृति सम्मान वरिष्ठ लेखक **हरिकृष्ण तैलंग** को प्रदान किया जाएगा। यह सम्मान प्रतिवर्ष साहित्य, संस्कृति, कला तथा मीडिया क्षेत्रों में उत्कृष्ट हस्ताक्षरों को दिया जाता है।

डॉ० हरीश शर्मा स्मृति सम्मान एवं पुरस्कार डॉ० नीरद को

गाजियाबाद, राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं संरक्षण के लिए समर्पित साहित्यकारों की संस्था कलमकार सभा द्वारा प्रविर्ष दिया जाने वाला 'डॉ० हरीश शर्मा स्मृति सम्मान एवं पुरस्कार' इस बार विख्यात साहित्यकार, आचार्य एवं अध्यक्ष हिन्दी व आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, के०एम० इन्स्टीट्यूट, आगरा के **डॉ० जयसिंह 'नीरद'** को दिया गया है।

अध्यक्ष के रूप में उपस्थित डॉ० कमलकिशोर गोयनका ने कहा कि यह राष्ट्रभाषा हिन्दी के लिए समर्पण की भावना का परिचायक है कि 'कलमकार सभा' से जुड़े साहित्यकार दिवंगत हिन्दी सेवियों की स्मृति बनाए हुए हैं।

डॉ० कैलाश निगम 'नायाब शायर' व 'सिद्ध गीतकार' उपाधि से सम्मानित

राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह, कैसरबाग, लखनऊ में शायरी और मौसीकी की अनोखी संध्या पं० विजय शंकर शुक्ला, महशर बरेलवी, के०के० श्रीवास्तव एवं अशोक कुमार मुख्य अतिथि की उपस्थिति में सम्पन्न हुई। खचाखच भरे श्रोताओं के समक्ष संगीत कलाकारों व साहित्यकारों ने **डॉ० कैलाश निगम** को 'नायाब शायर' एवं 'सिद्ध गीतकार' सम्मान से अलंकृत किया। डॉ० कैलाश निगम को दीर्घकालीन उत्कृष्ट साहित्यिक सेवाओं के लिए उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा रु० 51,000 का सुमित्रानन्दन पंत पुरस्कार भी प्रदान किया जा चुका है।

विश्वविद्यालय प्रकाशन, विशालाक्षी भवन, चौक, वाराणसी – 221 001

आध्यात्मिक साहित्य व अन्य महत्त्वपूर्ण पुस्तकें

1. वेद, पुराण, उपनिषद

Rgveda Samhita : 4Vols. (Sanskrit Text With English translation) *H.H. Wilson* Set 1800
Samaveda Samhita (Sanskrit Text With English translation) *R.T.H. Griffith* 450
Yajurveda Samhita (Sanskrit Text With English translation) *R.T.H. Griffith* 450
Atharvaveda Samhita : 3 Vols. (Sanskrit Text With English translation) *W. D. Whitney* Set 1350
ऋग्वेद (प्रथम खण्ड) 300
अथर्ववेद (प्रथम खण्ड) 250
यजुर्वेद (शुक्ल)(2 खण्ड में सम्पूर्ण) 550
सामवेद (2 खण्ड में सम्पूर्ण) 550
चारों वेद (4 खण्ड) (दयानंद संस्थान) 2500
ऋग्वेद (4 खण्ड) (बरेली) 240
यजुर्वेद / सामवेद (बरेली) प्रत्येक 60
अथर्ववेद (2 खण्ड) (बरेली) 140
सामवेद / यजुर्वेद / अथर्ववेद प्रत्येक 150
ब्रह्मवैवर्तपुराण (दो खण्ड) 575
बृहन्नारदीयपुराण (दो खण्ड) 350
अग्निपुराण (दो खण्ड) 600
भविष्य महापुराण (तीन खण्ड) 1000
वामनपुराण का सांस्कृतिक अध्ययन 100
कूर्मपुराण / मार्कण्डेय महापुराण 250 / 275
वायु पुराण / ब्रह्म पुराण 450 / 500
मत्स्य पुराण (2 खण्ड) 425
नारद पुराण/वामन पुराण (प्रत्येक 2 खण्ड) प्रत्येक 80
स्कन्द पुराण (3 खण्ड) 1500
देवी भागवत पुराण (2 खण्ड) 170
गणेश पुराण 100
108 उपनिषद (3 खण्ड) 200
उपनिषदों का सन्देश 125

2. महाभारत एवं भागवत

श्रीमद् एकनाथी भागवत *ना०वि० सप्रे* 600
महाभारततात्पर्यप्रकाशः–श्रीसदानन्दव्यासविरचितो *प्रो. विद्यानिवास मिश्र* 200
महाभारतम् (16वीं शती) 400
भागवत धर्म (2 भाग) *हरिभाऊ उपाध्याय* 230
महाभारत कथा *चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य* 140
भारत सावित्री *वासुदेवशरण अग्रवाल* 250

3. रामायण एवं रामचरित मानस

तुलसीदास कृत रामायण *ज्वालाप्रसाद मिश्र* 400
रामचरितमानस (3 खण्ड) *विनायक राव* 2250
श्रीरामचरितमानस टीका *योगेन्द्रप्रसाद* 600
रंगनाथ रामायण *तेलगु हिन्दी अनुवाद* 500
कृतिवास रामायण (3 खण्ड) *बंगला–हिन्दी* 750
कम्ब रामायण (5 खण्ड) *तमिल–हिन्दी* 1500
श्रीराम विजय–पं. श्रीधर कृत *मराठी–हिन्दी* 500
भानुभक्त रामायण *नेपाली–हिन्दी* 200
गिरधर रामायण *गुजराती–हिन्दी* 500
विचित्र रामायण *उड़िया–हिन्दी* 300
चन्द्रा रामायण *मैथिली–हिन्दी* 300
अद्‌भुत रामायण *संस्कृत–हिन्दी* 100
रामगाथा (4 खण्ड) *ओम जोशी* 2000
रामायण का काव्यमर्म *विद्यानिवास मिश्र* 225
मानस और ज्योतिष (तुलसी साहित्य में ज्योतिर्विज्ञान के तत्त्व) *वी.बी. सिंह* 200
तुलसी के हिय हेरि *विष्णुकान्त शास्त्री* 175
श्रीरामचरितमानस (जटाशंकरी टीका) 400
मानस सत्संग श्रीराम–गीता (प्रसंग–धर्मरथ) 400
वाल्मीकि रामायण (4 खण्ड) *संस्कृत–हिन्दी* 1200
कौशिक रामायण *कन्नड़ का हिन्दी अनुवाद* 200
बिलंका रामायण 150
दशरथनन्दन श्री राम *राजगोपालाचारी* 70
रामायणकालीन संस्कृति *शा०ना० व्यास* 60
राम कथा नवनीत *पांडुरंग राव* 240
रामायण महातीर्थम् *कुबेरनाथ राय* 245
रामायण का काव्यमर्म *विद्यानिवास मिश्र* 225
तजु संशय भजु राम *राजेन्द्र अरुण* 125
जग जननि जानकी *राजेन्द्र अरुण* 125
रघुकुल रीति सदा.../भरत गुन गाथा *''* प्रत्येक 250
रोम रोम में राम / हरि कथा अनंता *''* प्रत्येक 250
कथा राम कै गूढ़ (तुलसी) *रामचन्द्र तिवारी* 125
मानस सत्संग (केवट प्रसंग) *अश्विनी* 80
मानस सत्संग (नारद प्रसंग) *अश्विनी* 55
मानस सत्संग–श्रीराम–गीता *अश्विनी* 75
पवनपुत्र *भगवतीशरण मिश्र* 200
राम–कथा *गोपाल उपाध्याय* 400
भावार्थ रामायण (एकनाथी रामायण) 700
रंगनाथ रामायण (13वीं शती) 500
मोल्ल रामायण (14वीं शती) 200
तोरवे रामायण (16वीं शती) 500
कौशिक रामायण (हिन्दी अनुवाद) 200
अध्यात्म रामायण–उत्तर रामायण 400
कृत्तिवास रामायण (15वीं शती) (3 खण्ड) 750
कम्ब रामायण (9वीं शती) (5 खंड) 1500
श्रीराम विजय (17वीं शती) 500
भानुभक्त रामायण 200
गिरधर रामायण (19वीं शती) 500
माधव कन्दली रामायण (14वीं शती) 350
कारबि रामायण 100
बैदेहीश बिलास रामायण (18वीं शती) 350
राम पर अद्वितीय अलंकारिक रामायण ग्रंथ
बिलंका रामायण (15वीं शती) 300
विचित्र रामायण (18वीं शती) 300
जगमोहन (दण्डी) **रामायण** (15वीं शती) (5 खण्ड) 1500
चन्द्रारामायण (मैथिली रामायण) 300
मानस भारती (तुलसीदास कृत अवधी मूलपाठ सहित संस्कृत पद्यानुवाद) 300
रामचरितमानस जटाशंकरी टीका 300
वाल्मीकि रामायण (4 खण्ड) 1200
योगवासिष्ठ (केवल भाषा) (2 खण्ड) 500
रामायण (लवकुश काण्ड तक) 600
विनय पत्रिका *सं० वियोगी हरि* 125
रामायण के पात्र *नानाभाई भट्ट* 130

4. गीता, कुरान, बाइबिल

गीता रहस्य *लोकमान्य तिलक* 300
Gita Rahasya *Tilak* 325
Bhagvad Gita *Advaita Ashram* 160
हिन्दी ज्ञानेश्वरी *संत ज्ञानेश्वर, अनु. ना.वि. सप्रे* 180
श्रीमद्‌भगवद्‌गीता (3 खण्ड) *लाहिड़ी* 475
गीता प्रवचन *विनोबा भावे* 20
गीता प्रबन्ध *श्री अरविन्द* 150
गीता–तत्त्व–बोध (खण्ड 1–2) *बालकोबा भावे* 300
भगवद्‌गीता *डॉ. राधाकृष्णन्* 300
कृष्ण का जीवन संगीत *गुणवंत शाह* 300
श्रीमद्‌भगवद्‌गीता *शांकरभाष्य, नीलकण्ठी* 400
श्रीमद्‌भगवद्‌गीता (2 भाग) *मधुसूदन टीका* 1250
यथार्थगीता *स्वामी अड़गड़ानन्द* 200
Yatharth Gita *Swami Argranand* 175
गीता तत्व चिन्तन (भाग 1 तथा 2) *आत्मानन्द* 80
धर्म क्षेत्रे कर्म क्षेत्र : श्रीमद्‌भगवद्‌गीता *परमानंद* 200
गीता दर्शन (2 भाग) *रत्नाकर नराले* 900
श्रीमद्‌भगवद्‌गीता : आधुनिक व्याख्या *वर्मा* 100
श्रीमद्‌भगवद्‌गीता *डॉ० राजदेव मिश्र* 72
श्रीमद्‌भगवद्‌गीता *पं. श्रीवंशीधरमिश्र* 96
अष्टावक्र गीता *स्वामी प्रखर प्रज्ञानंद* 60
श्रीमद्भगवद्गीतारहस्य *बाल गंगाधर तिलक* 750
श्रीमद्‌भागवत महापुराण *कन्हैयालाल गौड़* 600
पुरुषोत्तम *डॉ० भगवती शरण मिश्र* 300
योगिराज श्रीकृष्ण *लाला लाजपतराय* 120
अष्टावक्र गीता (संस्कृत मूल के साथ अर्थ एवं भाष्य) 120
कुर्आन शरीफ़ (अ़रबी, नागरी दोनों लिपि में हिन्दी अनुवाद सहित) 500
गीता–माता *गांधीजी* 100

5. मनीषी, संत, महात्मा

प्रकाश पथ का यात्री *योगेश्वर* 160
अघोर पंथ और संत कीनाराम *सुशीला मिश्र* 250
शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान *सद्‌गुरुप्रसाद* 150
करुणामूर्ति बुद्ध *डॉ० गुणवन्त शाह* 25
महामानव महावीर *डॉ० गुणवन्त शाह* 30
बाबा नीब करौरी के अलौकिक प्रसंग *बच्चन सिंह* 250
उत्तराखण्ड की सन्त परम्परा *डॉ० शाह* 100
सोमबारी महाराज *हरिश्चन्द्र मिश्र* 50

सन्त रैदास *श्रीमती पद्मावती झुनझुनवाला* 60
श्री श्री सिद्धिमाता प्रसंग *राजबाला देवी* 80
समर्थ रामदास *ना०वि० सप्रे* 50
योगी कथामृत *परमहंस योगानन्द* 100
Autobiography of Yogi *Yoganand* 100
स्वामी विशुद्धानन्द परमहंसदेव : जीवन और दर्शन *नन्दलाल गुप्त* 150
Yogirajadhiraj Swami Vishuddhanand Paramhansdeva : Life & Philosophy 400
योगिराज तैलंग स्वामी *विश्वनाथ मुखर्जी* 40
ब्रह्मर्षि देवराहा-दर्शन *डॉ० अर्जुन तिवारी* 50
भारत की महान साधिकाएँ *विश्वनाथ मुखर्जी* 50
भारत के महान योगी (भाग 1-14) (सात जिल्दों में) *विश्वनाथ मुखर्जी (प्रत्येक)* 100
महाराष्ट्र के संत-महात्मा *ना०वि० सप्रे* 120
महाराष्ट्र के कर्मयोगी *ना०वि० सप्रे* 80
महात्मा बनादास : जीवन और साहित्य *सिंह* 100
भुड़कुड़ा की सन्त परम्परा *डॉ० इन्द्रदेव सिंह* 180
पूर्वांचल के संत महात्मा *परागकुमार मोदी* 60
पूर्वी उत्तर प्रदेश के संत कवि *कन्हैया सिंह* 130
कहौं तो को पतियास *भगवती प्रसाद सिंह* 1000
(श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार की दौहित्री, डॉ० राधा भालोटिया द्वारा भाई जी पर लिखित महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ)
संत सुधासार *वियोगी हरि* 250

6. आध्यात्म योग तन्त्र दर्शन

धन धन मातु गङ्ग *डॉ० भानुशंकर मेहता* 250
गङ्गा : पावन गङ्गा *डॉ० शुकदेव सिंह* 25
कथा त्रिदेव की *रामनगीना सिंह* 50
अयोध्या का राजवंश *रामनगीना सिंह* 80
उत्तिष्ठ कौन्तेय *डॉ० डेविड फ्राली* 175
साधना और सिद्धि *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 250
वाग्विभव *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 200
वाग्दोह *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 200
बृहत श्लोक संग्रह *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 120
गुप्त भारत की खोज *पाल ब्रंटन* 200
कृष्नायन *रामबदन राय* 300
शिव की अनुग्रह मूर्तियाँ *शान्तिस्वरूप सिन्हा* 250
आसन एवं योग मुद्राएँ *रविन्द्रप्रताप सिंह* 250
हमारी बेड़ियाँ *सुदर्शन राय* 80
सिख धर्म दर्शन *डॉ० अर्जुनदास केसरी* 30
रामचरित मानस के कथा स्रोत *रामप्यारे मिश्र* 700
कामरूप-कामाख्या *श्रीधरणीकान्त देवशर्मा* 40
ईश्वर का मानस बोध *बिहारी बापू* 325
हिंदू संस्कृति : हिन्दुओं का सामाजिक विघटन 45
कितने खरे हमारे आदर्श *सं. राकेश नाथ* 80
राम और रामराज्य *सं. राकेश नाथ* 75
श्रीकृष्ण और उन की गीता *सं. राकेश नाथ* 65
रामायण : एक नया दृष्टिकोण *प.ह. गुप्ता* 35
सन्तमत और संन्यास *हरिहरदर्शनानन्द* 100
सन्तमत अथना सत्-शिष्य-सम्प्रदाय ,, 300
बौद्ध दर्शन *राहुल सांकृत्यायन* 45
बुद्ध काव्याञ्जलि *श्री प्रसाद* 30
करुणामूर्ति बुद्ध *गुणवंत शाह* 25
वेदान्त में बौद्ध सन्दर्भ *डॉ० अनामिका सिंह* 40
बोधिचर्यावतार *प्रो० नारायणचन्द पराशर* 100
बौद्ध एवं जैन धर्म तथा दर्शन *'शरतेन्दु'* 90
युग प्रवर्तक महात्मा बुद्ध *अशोक कौशिक* 60
भगवान बुद्ध : जीवन और दर्शन *कोसम्बी* 125

7. म०म०पं० गोपीनाथ कविराज के अध्यात्मकपरक ग्रन्थ

भारतीय धर्म साधना / दीक्षा *प्रत्येक* 80
अखण्ड महायोग / श्री साधना *प्रत्येक* 50
श्रीकृष्ण प्रसंग / क्रम-साधना 150 / 60
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्व कथा 130
शक्ति का जागरण और कुण्डलिनी 100
सनातन-साधना की गुप्तधारा 120
साधु दर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 1, 2) / 70 (भाग 3) 50
मनीषी की लोकयात्रा (म०म०पं० गोपीनाथ कविराज का जीवन दर्शन) 200
प्रज्ञान तथा क्रमपथ / परातंत्र साधना पथ 80 / 40
तन्त्राचार्य गोपीनाथ कविराज और योग-तन्त्र साधना / ज्ञानगंज *प्रत्येक* 60
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग 1) (यंत्रस्थ)
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग 2) 250
अखण्ड महायोग का पथ और मृत्यु विज्ञान 60
काशी की सारस्वत साधना 35
भारतीय साधना की धारा / स्वसंवेदन *प्रत्येक* 50
श्री श्री सिद्धिमाता प्रसंग 80
Selected Writings of M.M. Gopinath Kaviraj 250

8. योगिराज श्यामचरण लाहिड़ी

पुराण-पुरुष योगिराज श्रीश्यामाचरण लाहिड़ी 170
Purana Purusha Yogiraj Sri Shayama Charan Lahiree *Chatterjee* 400
योग एवं एक गृहस्थ योगी : योगिराज सत्यचरण लाहिड़ी *शिवनारायण लाल* 150
धर्म और उसका अभिप्राय 80
प्राणमयं जगत *अशोककुमार चट्टोपाध्याय* 70
श्यामाचरण क्रियायोग व अद्वैतवाद 140
आत्मबोध *श्री भूपेन्द्रनाथ सान्याल* 30
श्रीमद्भगवदगीता (3 खण्डों में) ,, 475
विल्व-दल (द्वितीय खण्ड) ,, 90
आश्रम चतुष्टय *श्री भूपेन्द्रनाथ सान्याल* 75
कौन हैं ये श्यामाचरण *चट्टोपाध्याय* 120
श्रीमद्भगवद्दीता *पं० पञ्चानन भट्टाचार्य* 230

9. पं० अरुण कुमार शर्मा

मारणपात्र / मृतात्माओं से सम्पर्क 350 / 200
तिब्बत की वह रहस्यमयी घाटी 180
वह रहस्यमय कापालिक मठ 180
परलोक विज्ञान / रहस्य प्रत्येक 300
कुण्डलिनी शक्ति 275
तीसरा नेत्र (भाग-1) 250 (भाग-2) 300
मरणोत्तर जीवन का रहस्य 250
वक्रेश्वर की भैरवी / आकाशचारिणी *प्रत्येक* 180
अभौतिक सत्ता में प्रवेश / कारण पात्र *प्रत्येक* 200
वह रहस्यमयी सन्यासी / आवाहन *प्रत्येक* 250

10. संत रामचन्द्र केशव डोंगरेजी महाराज

श्रीमद्भागवत रहस्य / तत्त्वार्थ रामायण 220 / 200

11. करपात्री जी

रामायण-मीमांसा / भक्ति-सुधा 250 / 190
श्रीभागवत-सुधा / श्रीराधा-सुधा 76 / 70
गोपीगीत / भ्रमर-गीत 200 / 90
श्रीविद्या-रत्नाकर / श्रीविद्या वरिवस्या 140 / 70

12. रमण महर्षि

रमण महर्षि *आर्थर ओसबर्न* 30
श्री रमण महर्षि से बातचीत *वेंकटरमैय्या* 120
श्री रमण महर्षि का उपदेश : अपनी सहज अवस्था में रहिये *डेविड गॉडमेन* 225

13. जे. कृष्णमर्ति

ज्ञात से मुक्ति / गरुड़ की उड़ान *प्रत्येक* 70
ध्यान / हिंसा से परे 125 / 90
संस्कृति का प्रश्न 100
शिक्षा एवं जीवन का तात्पर्य / शिक्षा संवाद 60 / 75
स्कूलों के नाम पत्र 1-2 / सीखने की कला 100 / 15
आमूल क्रान्ति की आवश्यकता 100
अन्तिम वार्ताएँ / मृत्यु और उसके बाद 70 / 40
जीविका का प्रश्न 20
जीवन भाष्य (3 खण्डों में) 210
प्रथम और अंतिम मुक्ति 500

14. पं० रामकिंकर उपाध्याय

मानस चिन्तन (भाग-3) 85
मानस मन्थन (भाग-1)/ (भाग-2) *प्रत्येक* 110
मानस मन्थन (शिव तत्त्व) (भाग-3) 50
मानस मन्थन (लक्ष्मण चरित्र) (भाग-4) 80
मानस मन्थन (विभीषण शरणागत)(भाग-5) 90
मानस रोग (भाग-1) 60
मानस रोग (भाग-2) / (भाग-3) *प्रत्येक* 55
मानस चिकित्सा / धर्मसार भरत 100 / 45
चातक चतुर राम श्याम घन के 55
रामकथा शशि किरन समाना 50
तुलसी की दृष्टि / मानस के चार घाट 90 / 60
साधुचरित / तुलसी रघुनाथ गाथा 35 / 45
मानस पंचामृत / सुन्दरकाण्ड की सुन्दरता 55 / 80
शील सिन्धु राघव माधुर्य मूर्ति माधव 150
मानस एवं विनय पत्रिका का तुलनात्मक अध्ययन 60
मानस एवं गीता का तुलनात्मक विवेचन (दो भाग) 90
वन्दे विदेह तनया / रामकथा मंदाकिनी *प्रत्येक* 100
नाम रामायण 90
मानस दर्पण : भाग-1 / 2 / 3 90 / 120 / 30
मानस चरितावली(भाग-1) /(भाग-2) *प्रत्येक* 150
मानस प्रवचन भाग-1 / 2 / 3 100 / 75 / 100
मानस प्रवचन (भाग-5) / (भाग- 7) *प्रत्येक* 35
मानस प्रवचन (भाग-6) 75
मानस प्रवचन (भाग-8 से 17 तक) प्रत्येक 95
मानस प्रवचन (भाग-19)/ (भाग-20) *प्रत्येक* 35
भवानीशङ्करौ वन्दे (मानस चिन्तन) (खण्ड 2) 140
मुक्ति (खण्ड 5) 80

तुलसीदास मेरी दृष्टि में (खण्ड 1) 45
प्रसाद (प्रसाद की महिमा) (खण्ड 1) 25
विजय, विवेक और विभूति (खण्ड 1) 25
सुन्दरकाण्ड (खण्ड 1) 15
श्री राम नाम (खण्ड 1) 25
साधक साधन (खण्ड 1) 55
अंगद चरित्र (खण्ड 1) 80
श्रीराम का शील (खण्ड 1) 50
काम (दोष या गुण) (खण्ड 1) 30
श्रीराम गीता / दण्डक वन *प्रत्येक* 35
नवधा भक्ति (भाग-1)/ (भाग-2) 35 / 80
कृपा और पुरुषार्थ 70
मानस और भागवत में पक्षी 30
महारानी कैकेयी / तस्मै श्री गरुवे नमः 90 / 100
ज्ञान दीपक (भाग-1) / (भाग-2) 60 / 70
भगवान् श्रीराम सत्य या कल्पना ? 30
श्री राम और श्री कृष्ण / राम-परशुराम *प्रत्येक* 25
श्री राम के मित्र सुग्रीव और विभीषण 25
श्री हनुमान् जी महाराज / लोभ, दान व दया 25/35
दस - रथ व मुख 30

15. अरविन्द साहित्य

दिव्य जीवन / योग-समन्वय 285 / 240
गीता-प्रबंध / भारतीय संस्कृति आधार *प्रत्येक* 150
गीता-विज्ञान / अपने विषय में *प्रत्येक* 100
वेद रहस्य / भारत का पुनर्जन्म 125 / 80
मानव चक्र / सावित्री 115 / 165
ईशावास्योपनिषद / गीता का दिव्य सन्देश 30 / 60
श्री अरविन्द अथवा चेतना की अपूर्व यात्रा सत्प्रेम 140
माताजी के विषय में/श्रीमातृवाणी (शिक्षा) 190/150
श्रीमातृवाणी (प्रार्थना और ध्यान) 65
श्रीअरविन्द (संक्षिप्त जीवनी) 130

16. रामकृष्णपरमहंस

रामकृष्ण परमहंस : कल्पतरु की उत्सव लीला *कृष्णबिहारी मिश्र* 380
परमहंस, फिर आओ *सौ० शुभांगी भडभडे* 300
श्री रामकृष्ण लीला प्रसंग *स्वामी सारदानन्द* 125
रामकृष्णवचनामृत (दो खण्ड) 200
श्रीरामकृष्ण की अनन्य लीला 80
श्रीरामकृष्णदेव : जैसा हमने उन्हें देखा *चेतनानन्द* 100
श्रीरामकृष्ण भक्तमालिका (दो भाग) *गम्भीरानन्द* 80

17. विवेकानन्द

विवेकानन्द साहित्य (10 खण्ड) 750
स्वामी विवेकानन्द संचयन / पत्रावली 40 / 80
युगनायक विवेकानन्द *स्वामी गम्भीरानन्द* 225
भारतीय व्याख्यान स्वामी विवेकानन्द : एक जीवनी *स्वामी निखिलानन्द* 45
भक्तियोग / प्रेमयोग / कर्मयोग *प्रत्येक* 15
ज्ञानयोग / राजयोग 35 / 30
भारतीय व्याख्यान 285
विवेकानन्दचरित *सत्येन्द्रनाथ मजूमदार* 55
तरुण संन्यासी *राजेन्द्रमोहन भटनागर* 120
स्वामीविवेकानन्द की समसामयिक प्रासंगिकता *डॉ० अनिता चौधुरी* 50

18. नरेन्द्र कोहली

अभ्युदय (रामकथा 2 खंडों में) सजिल्द 1000
अभ्युदय (रामकथा 2 खंडों में) अजिल्द 550
महासमर (8 खंडों में) 3385
वसुदेव 195

19. मनु शर्मा

कृष्ण की आत्मकथा (8 खंड) 2400
द्रोण की आत्मकथा 300
कर्ण / गांधारी की आत्मकथा *प्रत्येक* 350
घरौंदा / विभाजित सवेरा *प्रत्येक* 300
समय साक्षी है / गांधी लौटे *प्रत्येक* 300
छत्रपति / अभिशप्त कथा *प्रत्येक* 250
दीक्षा / महात्मा 150 / 200

20. गाँधी, नेहरू

आत्मकथा (सम्पूर्ण) *गांधीजी* 120
विश्व-इतिहास की झलक (संक्षिप्त) *नेहरू* 150
हिन्दुस्तान की कहानी (सम्पूर्ण) *नेहरू* 200
जवाहर लाल नेहरू वाङ्मय (11 खण्ड) 2475

21. अम्बेडकर

डॉ० अम्बेडकर : जीवन के अंतिम कुछ वर्ष *नानकचंद रत्तू* 300
डॉ० अम्बेडकर : जीवन-मर्म *राजेन्द्रमोहन भटनागर* 250
डॉ० अम्बेडकर : चिन्तन और विचार *''* 200
(भारत रत्न) बाबा साहिब : डॉ० भीमराव अम्बेडकर *गोविन्द सिंह* 40
और बाबासाहेब अम्बेडकर ने कहा.... (5 खण्ड) *एल.जी. मेश्राम 'विमलकीर्ति'* 2500
डॉ० आंबेडकर का आर्थिक चिंतन *ज्ञानचन्द्र खिमेसरा* 30
डॉ० आम्बेडकर के आर्थिक विचार और नीतियाँ *डॉ० विष्णु दत्त नागर* 30
भारत का विभाजन *डॉ० भीमराव आम्बेडकर* 75
डॉ० बाबासाहब आंबेडकर : जीवन चरित *धनंजय कीर* 250

22. कालिदास

महाकवि कालिदास की आत्मकथा *द्विवेदी* 80
महाकवि कालिदास *शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र'* 25
कालिदास स्मृति ग्रन्थ *अच्युतानन्द घिल्डियाल* 175
कालिदास ग्रन्थावली (महाकवि के आठ अमर ग्रन्थों के साथ) *अच्युतानन्द घिल्डियाल* 500
कालिदासकालीन शिक्षा-व्यवस्था *''* 200
कालिदास : अपनी बात *आ. रेवाप्रसाद द्विवेदी* 350

23. ओशो

कुण्डलिनी जागरण और शक्तिपात 40
कुण्डलिनी और सात शरीर 40
पंतजलि : योग सूत्र (5 भाग) 1175

24. काशी विषयक ग्रन्थ

शिव काशी *डॉ० प्रतिभा सिंह* 400
'हंस' काशी अंक *(1933 ई०)* *प्रेमचंद* (यन्त्रस्थ)
बना रहे बनारस *विश्वनाथ मुखर्जी* 50
काशी का इतिहास *डॉ० मोतीचन्द्र* 650
काशी की पाण्डित्य-परम्परा *बलदेव उपाध्याय* 600
काशी के घाट : कलात्मक एवं सांस्कृतिक अध्ययन *डॉ० हरिशंकर* 300
धन धन मातु गङ्ग *डॉ० भानुशंकर मेहता* 250
काशी का रंग परिवेश *कुँवरजी अग्रवाल* 100
स्वतन्त्रता-आन्दोलन और बनारस *ठाकुर प्र. सिंह* 160
आज भी वही बनारस है *विश्वंभरनाथ त्रिपाठी* 150
कलागुरु केदार शर्मा के व्यंग्य-चित्रों में काशी *डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह* 300
Benaras : The Sacred City *Havell* 150
Prinsep's Benares Illustrated *Prinsep* 800
Towards the Pilgrimage Archetype The Pancakrosi Yatra of Banaras *Rana P.B. S.* 250
भारत के प्रसिद्ध हिन्दू तीर्थ *श्रीनाथ मिश्र* 80
Varanasi Vista : Early Views of the Holy City *Jagmohan Mahajan* 1750
Banaras in the Early 19th Century : Riverfront Panorama *Rai Anand Krishna* 750
Benares Seen from Within *Richard Lannoy* 3500
Benares : A World Within a World (The Microcosm of Kashi Yesterday and Today) *Richard Lannoy* 495
Luminous Kashi to Vibrant Varanasi *K. Chandramouli* 575
Banaras Region : A Spiritual and Cultural Guide *Singh & Rana* 395
Cultural Landscapes and the Lifeworld Literary Images of Banaras *Rana P.B. S.* 450
Sarnath : Varanasi and Kausambi A Pilgrim's Guide Book *Bhatia* 125
A Pilgrimage to Kashi : Banaras, Varanasi, Kashi, History, mythology and culture of the most strange and fascinating city in India *Gol* 350

25. डॉ० रामकुमार राय के तन्त्र विषयक ग्रन्थ

मंत्र महोदधि (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) 435
हिन्दी मन्त्र महार्णव (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) *देवी खण्ड / देवता खण्ड* 500 / 450
मिश्र खण्ड 250
कुलार्णव तन्त्र (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद) 200
सप्तशतीसर्वस्वम् (नानाविधिसप्तशतीरहस्यसंग्रहः) 150
शिवस्वरोदय (मूल + अंग्रेजी) 75
वामकेश्वरीमतम् (मूल + अंग्रेजी) 75
कौलज्ञाननिर्णय (मूल + अंग्रेजी) 200
डामर तंत्र (मूल एवं अंग्रेजी अनुवाद सहित) 100
डामर तंत्र (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) 75
मन्त्र रामायण (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) 75
कामरत्नतंत्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) 100
अद्भुत रामायण (महर्षि वाल्मीकि कृत) 50
भूत डामर तंत्र (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) 75

शाक्तानन्दतरङ्गिणी (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) 200
श्यामारहस्यम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) 250
श्रीविद्यार्णवतन्त्रम् (मूलमात्र) (तीन खण्ड) 900
श्री नीलतन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) 150
मन्त्रयोग संहिता (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) 100
भूत डामर महातन्त्रम् (मूलमात्र) 100
योनितन्त्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) 75
नारद पंचरात्रम् (मूल एवं हिन्दी अनुवाद) 300
वृहत् तन्त्रसार (मूल + हिन्दी)(दो खण्ड) 1000
Mantra Mahodhadhi
(Text in Nagari Script & Text in Roman With English Translation) (2 Vols.) 1800
Encyclopedia of Yoga 300
Encyclopedia of Indian Erotices 250
Dictionaries of Tantrasastra 150
श्री कृष्ण यामल महातन्त्रम् (मूल मात्र) 200

26. योग साधना

वाल्मीकिरचनामृत-3 **योगवसिष्ठ के राम** *आचार्य श्रीकुबेरनाथ शुक्ल* 90
वाल्मीकिरचनामृत-4 **योगवसिष्ठ के आख्यानक** *आचार्य श्रीकुबेरनाथ शुक्ल* 100
सोऽम् योग-विज्ञान (खंड 2) *महर्षि अरविन्द* 300
सोऽम् दिव्ययोग (प्रथम खंड) *महर्षि अरविन्द* 200
आकाशात् पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम् *मालती देवी* 150
साधना और सिद्धि *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 250
योग के विविध आयाम *रामचन्द्र तिवारी* 40
आसन एवं योग मुद्रायें *रविन्द्र प्रताप सिंह* 250

27. जीवनी : अनुचिन्तन

भारत की विशिष्ट विभूतियां *अर्जुनदास केसरी* 100
आचार्य चन्द्रबली पांडे *डॉ० कन्हैया सिंह* 200
लाला लाजपत राय : व्यक्ति और विचार *विश्व प्रकाश गुप्त, मोहिनी गुप्त* 100
मैं भीष्म बोल रहा हूँ *डॉ० भगवतीशरण मिश्र* 250
पीतांबरा / अग्नि-पुरुष ,, 325 / 300
देख कबीरा रोया /पहला सूरज ,, 250 / 150
अरण्या / गोविन्द गाथा ,, 350 / 250
सेनापति पुष्यमित्र अभिषेक (2 खण्ड) *सुशील कुमार* 700
श्री शंकराचार्य *आचार्य बलदेव उपाध्याय* 160
आदि श्री गुरूग्रन्थ साहिबा (2 खण्ड) 1800
श्री गुरुग्रन्थ साहिब पुस्तकाकार (4 खण्ड) 1200
श्री दसम ग्रन्थ साहिब (4 खण्ड) 1000
अनुत्तर योगी तीर्थंकर महावीर (4 खण्ड) (भगवान महावीर की जीवनी) *वीरेन्द्रकुमार जैन* 1200
महात्मा गाँधी / विवेकानन्द *रोमाँ रोलाँ* 200/150
उत्तरयोगी (श्री अरविन्द : जीवन और दर्शन) *डॉ० शिवप्रसाद सिंह* 450
महर्षि दयानन्द *यदुवंश सहाय* 300
आदि शंकराचार्य *डॉ० जयराम मिश्र* 275
गुरु नानकदेव : जीवन और दर्शन ,, 125
मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम *जयराम मिश्र* 100
रामभक्त शक्तिपुंज हनुमान *जयराम मिश्र* 150

28. आत्मकथा

मेरी कहानी (सम्पूर्ण) *जवाहर लाल नेहरू* 200
मेरी आपबीती *बेनजीर भुट्टो* 450
एक सैक्स वर्कर की आत्मकथा नलिनी जमीला 95
जीवन जीने की कला (खंड-1) *महर्षि अरविन्द* 90
भक्ति-रस *महर्षि अरविन्द* 125
मंगल कलश *कुलदीप सिंह* 70
श्री गुर्वर्चन-पद्धति तथा श्रीमद्गुरुस्तोत्ररत्नावली *आचार्य श्री रामानन्द शास्त्री 'आनन्द'* 45
योगी कथामृत *परमहंस योगानन्द* 100
आत्मकथा *राजेन्द्र प्रसाद* 250
चार्ल्स डार्विन की आत्मकथा *चार्ल्स डार्विन* 150
क्या भूलूँ क्या याद करूँ *हरिवंशराय बच्चन* 225
नीड़ का निर्माण फिर *हरिवंशराय बच्चन* 225
बसेरे से दूर *हरिवंशराय बच्चन* 225
'दशद्वार' से 'सोपान' तक *हरिवंशराय बच्चन* 300
पंखहीन / मुक्त गगन में *विष्णु प्रभाकर प्रत्येक* 200
और पंछी उड़ गया *विष्णु प्रभाकर* 200
जो मैंने जिया *कमलेश्वर* 125
यादों के चिराग/ जलती हुई नदी ,, 100 / 200
टुकड़े-टुकड़े दास्तान *अमृतलाल नागर* 200
आज़ादी की कहानी *अबुल कलाम आज़ाद* 150

29. पर्यटन एवं यात्रावृत्तान्त

अरुणाचल यात्रा *कृष्णनाथ* 140
श्री बदरीनाथ धाम-दर्पण *शिवराज सिंह सजवाण रावत* 50
उत्तराखंड में आध्यात्मिक पर्यटन मंदिर एवं तीर्थ *डॉ० सरिता शाह* 75
पर्यटन उत्पाद एवं प्रबन्ध *बी० आर० सारण* 500
पर्यटकों का देश भारत *शिवस्वरूप सहाय* 90
पर्यटन एक अध्ययन *डॉ० पापिया दासगुप्ता* 60
पर्यटन-सिद्धान्त और प्रबंधन तथा भारत में पर्यटन *शिवस्वरूप सहाय* 160
भारत में पर्यटन *राजेश कुमार व्यास* 200
भारत के प्रमुख पर्यटन उत्पाद *मनोज दीक्षित* 250
पर्यटन के मनोरम स्थल *राजीव रंजन* 80

30. हास्य व्यंग्य

कौन कुटिल खल कामी *प्रेम जनमेजय* 200
काग के भाग बड़े *प्रभाशंकर उपाध्याय* 145
काका की फुलझड़िया *काका हाथरसी* 60
मेरे इक्यावन व्यंग्य *गिरिराजशरण अग्रवाल* 95
हुल्लड़ हज़ारा *हुल्लड़ मुरादाबादी* 70
उर्दू के श्रेष्ठ व्यंग्य *शहरोज क़मर* 150
श्रेष्ठ हास्य कथाएं *कन्हैयालाल नंदन* 100
श्रेष्ठ व्यंग्य कथाएं *कन्हैयालाल नंदन* 175
श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य कहानियाँ ,, 175
हास्यं शरणं गच्छामि *ज्योतींद्र ह. दवे* 175

31. महिलापयोगी

सुघड़ गृहिणी : खुशहाल परिवार की सृजनकार 96
झारापकर सिलाई शास्त्र 50
होम टेलरिंग कोर्स 60
लेडीज हैल्थ गाइड 120
होम ब्यूटिशियन कोर्स (घर में ब्यूटी पार्लर कैसे खोलें) *ज्योति राजीव* 75
ऊषा बुनाई शिक्षा (बुनाई के सवा सौ नमूने) 96
हैल्थ एण्ड ब्यूटी गाइड *सरला भाटिया* 200
हर्बल ब्यूटी एण्ड हेयर केअर *सुमन महेन्द्रू* 60
शहनाज हुसैन ब्यूटी बुक 165
200 ब्यूटी टिप्स *कुमारी अपेक्षा एम. कुमार* 100

32. पाक कला

जीरो ऑयल (साउथ इण्डियन कुक बुक) *बिमल छाजेड़* 95
भोजन बनाना सीखो *शैल सरल* 90
जीरो ऑयल मिठाइयां *शैल सरल* 95
आयुर्वेदिक भोजन संस्कृति *विनोद वर्मा* 125
ठंडा मजा आइसक्रीम कुल्फी *मुदित मोहन* 50
जीरो ऑयल मिठाइयां *डॉ० बिमल छाजेड़* 100
कलेवा *विश्वनाथ* 42
खाना खज़ाना *संजीव कपूर* 250
भोग प्रसाद *चंद्रप्रभा* 96

33. कृषि एवं बागवानी

फलोत्पादन के मूल आधार *विक्टर रे गार्डनर* 90
कृषि एवं ग्राम-विकास में विडियों एवं दूरदर्शन *डॉ० विरेन्द्र कुमार दूबे* 42
अलंकृत उद्यान एवं पर्यावरण *एस. के. गिरि* 300
प्रसिद्ध पौधे *ब्रिजमोहन जौहरी* 30
सोयाबीन (कृषि, इंजीनियरी, रसायन एवं पोषण) *सदाचारी सिंह तोमर* 60
औषधीय एवं सुगन्धीय पौधों की व्यावसायिक खेती *वीरेन्द्र कुमार दूबे* 200
प्रायोगिक उद्यानिकी *के. डी. गूजर* 62
अलंकृत बागवानी एवं पर्यावरण *एस. के. गिरि* 150
फूल-पत्तियों और बेलों से अपनी पुष्प-वाटिका कैसे संवारें *प्रभा भार्गव* 96
गृह वाटिका *डॉ० जय शंकर मिश्र* 140

34. खेल साहित्य

विभिन्न खेलों के नियम *महेश दत्त शर्मा* 50
शतरंज कैसे खेलें *प्रकाश नगायच* 60
ओलम्पिक *सुधीर सेन* 250
जूडोकराटे (कुंगफू एवं बाक्सिंग सहित) *विवेक श्री कौशिक 'विश्वामित्र'* 60
खेल-कूद में शारीरिक प्रशिक्षण *प्रमाणिक* 595
बॉडी बिल्डर कोर्स *गोबिन्द सिंह* 50
शतरंज कैसे खेलें *विवेक कौशिक* 60
ओलिम्पिक एन्साइक्लोपीडिया *पाण्डेय* 198
नये सचित्र खेल नियम *अजय भल्ला* 100
100 प्रसिद्ध भारतीय खिलाड़ी *चित्रा गर्ग* 300
क्रिकेट के सितारे *रवि चतुर्वेदी* 250
फोटोग्राफी *विजय* 35
फोटोग्राफी तकनीक एवं प्रयोग *नरेन्द्र सिंह यादव* 105
फोटो पत्रकारिता *सुभाष सप्रू* 100

पुस्तकों के मूल्य बिना किसी पूर्व सूचना के परिवर्तनीय हैं। (Prices are subject to change without prior notice.)

डॉ० रामविलास शर्मा आलोचना सम्मान डॉ० शंभु गुप्त को

वर्ष 2008 का 'डॉ० रामविलास शर्मा आलोचना सम्मान' **डॉ० शंभु गुप्त** को देने का निर्णय लिया गया है। डॉ० शंभु गुप्त को यह आलोचना सम्मान आगामी 22-23 अगस्त को इलाहाबाद में होने जा रहे 'केदार सम्मान' के आयोजन में प्रदान किया जायेगा।

डॉ० भीमराव तथा गाँधी दर्शन पुरस्कार-2009

मध्य प्रदेश विधान सभा सचिवालय द्वारा संसदीय एवं संवैधानिक विषयों पर हिन्दी में श्रेष्ठ लेखन को प्रोत्साहित करने हेतु डॉ० भीमराव अम्बेडकर स्मृति पुरस्कार के लिए भारतीय नागरिकों से प्रविष्टियाँ आमंत्रित हैं। चयनित कृतियों पर 40, 30 और 20 हजार रुपए की राशि क्रमश: प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार पर प्रदान की जाएगी।

सन् 2007 से 2008 की अवधि में प्रकाशित ग्रन्थ या रचित पाण्डुलिपियाँ विचारार्थ स्वीकार की जाएँगी।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के दर्शन पर केन्द्रित हिन्दी में लिखे गए साहित्य को प्रोत्साहन देने के लिए पुरस्कार योजना के तहत चयनित कृतियों पर रुपए 50, 30, 20 हजार के क्रमश: प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार दिए जाएँगे। दोनों पुरस्कारों के लिए पुस्तकों अथवा पाण्डुलिपियों की सात प्रतियाँ निर्धारित प्रविष्टि प्रपत्र के साथ दिनांक 31-10-2009 तक प्रमुख सचिव, मध्य प्रदेश विधान सभा सचिवालय, भोपाल-462004 के पास अवश्य पहुँच जानी चाहिए।

नियमावली एवं प्रविष्टि प्रपत्र उपर्युक्त पते पर डाक द्वारा या शासकीय कार्य दिवसों में सचिवालय आकर नि:शुल्क प्राप्त किए जा सकते हैं।

मुम्बई में पुस्तकालय

मुम्बई, वरिष्ठ पत्रकार एवं 'जीवन प्रभात' के सम्पादक सत्यनारायण मिश्र द्वारा स्थापित 'मातुश्री दुर्गाबाई महेश्वरदत्त मिश्र सेवा संस्थान' जीवन प्रभात विमला पुस्तकालय प्रारम्भ किया गया है। इसमें नवीनतम पुस्तकों के साथ-साथ प्रमुख लेखकों की सम्पूर्ण पुस्तकों की विशेष व्यवस्था की जा रही है। स्थानीय पुस्तक प्रेमी इसका लाभ उठा सकते हैं। लेखक, प्रकाशक, संस्थाएँ एवं सार्वजनिक प्रतिष्ठान प्रचार-प्रसार के लिए अपना साहित्य तथा पत्र-पत्रिकाएँ— **ग्रंथपाल जीवन प्रभात विमला पुस्तकालय,** ए 4/1, कृपा नगर, इरला ब्रिज, मुम्बई-400056 को भेज सकते हैं।

पाठकों के पत्र

'भारतीय वाङ्मय' का जून-जुलाई का अंक प्राप्त हुआ। आपने हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति का जो विश्लेषण प्रस्तुत किया है, वह बड़ा ही पारदर्शी तथा आपके दृढ़ राष्ट्र-प्रेम का परिचायक है। आप भारतीय संस्कृति के जागरूक प्रहरी हैं और आपके सम्पादकीय लेख को पढ़कर ऐसा लगा कि पाश्चात्य शिक्षा और संस्कृति को बिना सोचे-समझे जो महानुभाव इस महान देश पर थोपने का प्रयास कर रहे हैं, वे अपने उद्देश्य में कभी सफल नहीं हो सकेंगे। इसके साथ ही भारतीय शिक्षा की कमियों और विसंगतियों का आकलन भी बड़ा ही तथ्यात्मक है। इस प्रभावशाली सम्पादकीय के लिए मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें।**—खेमचन्द्र चतुर्वेदी,** अजमेर

'भारतीय वाङ्मय' जून-जुलाई अंक प्राप्त हुआ। प्रत्येक माह इसकी तीव्र प्रतीक्षा रहती है क्योंकि 'भारतीय वाङ्मय' 'यथा नाम तथा गुण' को प्रदर्शित करने वाली एकमात्र हिन्दी पत्रिका है जो पाठक को पुस्तक पढ़ने के लिए प्रेरणा देती है साथ में लेखनी से कुछ लिखने के लिए भी विवश कर देती है। इतना वैविध्यपूर्ण, देश-विदेश की साहित्यिक हलचलों से भरी पड़ी 'भारतीय वाङ्मय' है। कतिपय उत्कृष्ट लेखों के साथ उत्कृष्ट किताबों के अंश प्रकाशित करने की सराहनीय योजना के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। 'किताबों में कॅरियर' के स्तम्भ से बेरोजगारों को नयी दृष्टि एवं प्रयोग भी सुलभ हो सकेंगे। अत्र-तत्र-सर्वत्र, पाठकों के पत्र, सम्मान पुरस्कार, स्मृति शेष, संगोष्ठी-लोकार्पण और प्राप्त पुस्तकों की सूचनाओं से हिन्दी में कुछ शेष मानो नहीं बचा। ऐसे श्रमसाध्य-सफल प्रकाशन के लिए 'भारतीय वाङ्मय' संपादक-प्रकाशक एवं पाठकों को साधुवाद एवं अभिवादन।

—डॉ० राजकुार उपाध्याय 'मणि', वाराणसी

प्रस्तुत अंक (जून-जुलाई) सम्पूर्ण साहित्य-जगत् की बहु-आयामी गतिविधियों की संवादिका की भूमिका का बखूबी निर्वाह करता है। आपकी सम्पादकीय टिप्पणियाँ आपके पुण्यश्लोक पितृश्री के प्रतिनिधित्व को अक्षरित करती हैं। आपको अशेष धन्यवाद कि आप 'आत्मा वै जायते पुत्र:' इस वैदिक उक्ति को अक्षरश: चरितार्थ कर रहे हैं। लेखन-प्रकाशन से जुड़ी दुनिया के लिए तो यह पत्रिका अनिवार्य बन गई है। मैं इसकी उत्तरोत्तर समृद्धि की कामना करता हूँ।

—डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव, पटना

'भारतीय वाङ्मय' जून-जुलाई 09 (संयुक्तांक) प्राप्त हुआ। धन्यवाद।

सच कहूँ तो मास में प्राप्त होने वाली 12, 15 पत्रिकाओं में 'भारतीय वाङ्मय' देखकर मन बड़ा प्रसन्न होता है। 'भारतीय वाङ्मय' एक विलक्षण पत्रिका है। जैसे अजायबघर में नए नए पशु-पक्षी आदि देखकर मन बल्लियों उछल जाता है वैसे ही पत्रिकाओं की भीड़ में यह पत्रिका पाकर मन को बड़ी शान्ति मिलती है। अच्छी, सुन्दर, पठनीय सामग्री प्रदान करने हेतु आप तथा सहयोगी भाई बधाई के पात्र हैं।

—मदन मोहन वर्मा, ग्वालियर

'भारतीय वाङ्मय' (मासिक) का प्रत्येक अंक प्राप्त हो रहा है। हार्दिक साधुवाद! सचमुच यह पत्रिका हिन्दी ज्ञान व साहित्यिक समाचारों की एकमात्र पत्रिका है।

—डॉ० कैलाशनाथ निगम, लखनऊ

उच्च शिक्षा

उच्च-शिक्षा यथा स्नातकोत्तर, कानून, औषधिशास्त्र (मेडिकल), प्रौद्योगिकी (आई०आई०टी०) इत्यादि के लिए हिन्दी में ग्रन्थ तैयार करें। इनमें तकनीकी शब्दों का अनुवाद न करके, उनके मूल रूप में ही, देवनागरी में लिखने से विषय को समझना अति सहज होगा। तकनीकी शब्दों का अनुवाद इतना दुरूह होता है कि न तो बोधगम्य होता है, न ही उन्हें सरलता से हृदयंगम करना सम्भव होता है। उच्च शिक्षा के बिना हम जीवन में उन्नति नहीं कर सकते और हिन्दी में उसकी कोई तैयारी नहीं है। अत: सभी समर्थ परिवार अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम से निजी विद्यालयों में आरम्भ से ही पढ़ा रहे हैं। सरकारी विद्यालयों और निजी विद्यालयों की गुणवत्ता में भी जमीन-आसमान का अन्तर है। अब तो केन्द्र सरकार भी कक्षा एक से ही अंग्रेजी को अनिवार्य विषय बनाने वाली है। यह एक प्रतिगामी, किन्तु वर्तमान में अपरिहार्य कदम है। जब तक हिन्दी में उच्च शिक्षा के लिए सरल एवं सुबोध पाठ्यग्रन्थ तैयार नहीं होंगे, अंग्रेजी से बचा नहीं जा सकेगा। बड़ी हास्यास्पद स्थिति होती है जब घर में बच्चों को हिन्दी का अर्थ, अंग्रेजी शब्द के द्वारा बताना पड़ता है। आई०आई०टी०, आई०आई० एम० आदि की परीक्षाएँ उत्तीर्ण करने वाले छात्रों को घर बैठे लाखों रुपयों की नौकरी मिल जाती है। पर आज यह शिक्षा अंग्रेजी माध्यम के बिना सम्भव नहीं है। क्या कभी हिन्दी इस धरातल तक पहुँच सकेगी या हिन्दी-प्रेमियों के स्वप्न दिवास्वप्न बन कर ही रह जाएँगे?

अंग्रेजी का आतंक इतना जबर्दस्त हो गया है कि भारत की मानसिकता उससे त्रस्त है, भयभीत है। हर भारतवासी को यह प्रतीत कराया जा रहा है कि यदि वह अंग्रेजी नहीं पढ़ेगा तो रोटी कमा नहीं सकता।

—आचार्य रघुनाथ भट्ट

संगोष्ठी/लोकार्पण

लमही में उमड़ा मुंशी प्रेमचंद के मुरीदों का मेला

वाराणसी, मुंशी प्रेमचंद की 129वीं जयन्ती पर 31 जुलाई को लमही में उपन्यास सम्राट के मुरीदों का मेल उमड़ा। रचनाओं के जरिए गरीबों-मजलूमों और मेहनतकशों के दर्द को आवाज देने वाले मुंशीजी को लोगों ने माल्यार्पण कर याद किया। रंगकर्मियों व कलाकारों ने अपनी कला की बानगी पेश की। वहीं नगर में विभिन्न स्थानों पर हिन्दीसेवियों ने संगोष्ठी के साथ ही पदयात्रा निकाली।

प्रेमचंद की लघु कहानियों पर वीडियो

नयी दिल्ली। उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद अब किताबों में ही सिमटे नहीं रहेंगे, बल्कि वह अब संचार के आधुनिक माध्यमों में भी जगह बना चुके हैं। हिन्दी के इस मूर्धन्य साहित्यकार की 129वीं जयन्ती पर उनकी कुछ प्रसिद्ध कहानियों पर बने धारावाहिकों को संजोकर प्रमुख वीडियो कम्पनी 'शेमारू' ने डीवीडी और वीसीडी जारी की है, जिसका उद्देश्य आधुनिक भारतीय कहानी के अग्रणी साहित्यकार की कृतियों को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाना है।

मुंशी प्रेमचंद लमही महोत्सव के तहत पैतृक गाँव स्थित स्मारक में आयोजित समारोह में मंडलायुक्त सुरेशचंद्रा व जिलाधिकारी अजय कुमार उपाध्याय ने महोत्सव को विश्वस्तरीय स्वरूप देने व राष्ट्रस्तर पर मनाने का संकल्प लिया। वीडीए उपाध्यक्ष आरपी गोस्वामी ने महोत्सव के लिए विभाग की ओर से प्रतिवर्ष 25 हजार रुपये देने की घोषणा की। प्रेरणा कला मंच की ओर से प्रेमचंद की रचना 'मुक्तिमार्ग' पर आधारित 'प्रेम की बोली बोल' नाट्य का रंगकर्मी मोतीलाल के निर्देशन में कलाकारों ने मंचन किया। अस्मिता संस्था की ओर से 'बड़े घर की बेटी' व सनबीम लहरतारा के बच्चों की ओर से 'मंत्र' कहानी का नाट्य मंचन किया गया। अनेकानेक अन्य प्रस्तुतियों ने जैसे—सोहर, कजरी, गीतों के जरिए श्रोताओं को भावविभोर कर दिया। शुरुआत मंडलायुक्त, डीएम, वीडीए उपाध्यक्ष ने प्रेमचंद की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर किया। पं० श्रीकृष्ण तिवारी, प्रो० सुरेन्द्र प्रताप, हेमंत शर्मा, डॉ० राजेन्द्र पाण्डेय आदि ने भी पुष्पांजलि अर्पित की। स्वागत हिमांशु उपाध्याय व डॉ० दुर्गाप्रसाद श्रीवास्तव ने किया।

दूसरी ओर लमही ग्रामवासियों की ओर से रामलीला मैदान में जयन्ती मनाई गई। यहाँ सेतु संस्था की ओर से नक्कारे की आवाज पर 'अलग्यौझा' व 'सुभागी' नौटंकी प्रस्तुत की गई। प्रेमचंद मार्गदर्शन केन्द्र व पुस्तकालय के नेतृत्व में गाँव के बच्चों ने 'सद्गति' कहानी पर आधारित नाट्य का मंचन किया। इसमें संस्था कुटुम्ब, गुड़िया, पीस अकादमी ने सहभाग किया। विभिन्न स्कूलों के बच्चों ने भी नाट्य प्रस्तुत किए। दूर-दराज के गाँवों से आई महिलाओं व बच्चों की भीड़ सबेरे से ही जमी रही।

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा का स्थापना दिवस तथा लोकार्पण

महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति विभूतिनारायण राय ने राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के स्थापना दिवस पर आयोजित समारोह में डॉ० अनिता विजय ठक्कर द्वारा लिखित 'हिन्दी की प्रचार संस्थाएँ : स्वरूप और इतिहास' ग्रन्थ का लोकार्पण करते हुए कहा, ''अपनी धरती की गहराई में जड़ें रखने वाले पौधे किसी भी दिशा से आनेवाले वायु के उष्ण व शीतल झोंकों से खेलते हुए डटे रहने में कामयाब रहते हैं। पूज्य बापू की कर्मभूमि वर्धा में महात्मा गाँधी द्वारा स्थापित राष्ट्रभाषा प्रचार समिति ने देश की समन्वयात्मक भाषा हिन्दी की सेवा करने में अपूर्व क्षमता का कीर्तिमान स्थापित किया है।''

जेड ए अहमद की आत्मकथा का लोकार्पण

डॉ० अहमद मजदूरों और किसानों के अधिकारों की आवाज के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन मजदूरों एवं किसानों के उद्धार तथा स्वाधीनता संग्राम के लिए समर्पित किया। 'मेरे जीवन की कुछ यादें' पुस्तक का विमोचन एवं समारोह की अध्यक्षता कर रहे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव श्री ए०बी० बर्द्धन ने यह बातें लोकार्पण अवसर पर कहीं। मूल हिन्दी में प्रकाशित पुस्तक के साथ-साथ डॉ० शम्स इकबाल द्वारा किए गए पुस्तक के उर्दू अनुवाद का लोकार्पण भी किया गया।

दरभंगा पुस्तक मेला

नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया द्वारा दरभंगा के राज मैदान में 30 मई से 7 जून 2009 तक पुस्तक मेले का आयोजन किया गया। स्थानीय प्रशासन के सहयोग से आयोजित इस पुस्तक मेले का उद्घाटन ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के प्रभारी कुलपति डॉ० मदन मोहन पाण्डेय ने किया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में उन्होंने कहा कि टीवी, इंटरनेट, फिल्म जैसे तकनीकी माध्यों के बढ़ते दबदबे के बावजूद पुस्तकें आज भी ज्ञान प्राप्ति का सबसे सरलतम माध्यम बनी हुई हैं। ज्ञान संवर्धन के लिए इस प्रकार के मेलों में सभी लोगों को अपनी मनपसंद और महत्त्वपूर्ण पुस्तकें प्राप्त करने का सुअवसर प्राप्त होता है।

पी सुंदरैया की आत्मकथा का विमोचन

साधारण जीवनशैली, त्याग की भावना और लोगों की उन्नति और समृद्धि के लिए निरन्तर संघर्ष करते रहना, यही पी सुंदरैया का जीवन था। उनका जीवन उन सभी के लिए एक आदर्श की तरह है, जो बेहतरी के लिए समाज में बदलाव लाने के उद्यमों में संलग्न हैं। एनबीटी द्वारा प्रकाशित पी सुंदरैया की आत्मकथा के लोकार्पण अवसर पर आमन्त्रित वक्ताओं ने यह बातें कहीं।

रतन चौहान का काव्य संग्रह 'तुरपई' लोकार्पित

वनमाली सृजन पीठ द्वारा भोपाल में कवि रतन चौहान के नए कविता संग्रह 'तुरपई' का लोकार्पण वरिष्ठ आलोचक प्रो० कमला प्रसाद, प्रसिद्ध कथाकार-कवि संतोष चौबे तथा आलोचक-कवि राजेश जोशी ने मिलकर किया। लोकार्पित संग्रह के बहाने चौहान के कृति-व्यक्तित्व पर विस्तार से चर्चा हुई। कला समीक्षक विनय उपाध्याय ने वनमाली सृजन पीठ की प्रवृत्तियों और गतिविधियों पर प्रकाश डाला।

तुलनात्मक रामायण पर विद्वानों की संगोष्ठी

चैन्नई की साहित्यानुशीलन समिति की ओर से तुलनात्मक रामायण विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता वयोवृद्ध चिंतक लेखक एवं समिति के संरक्षक श्री बालकृष्ण गोयन्का जी ने की। समितिप्रमुख डॉ० इंदरराज बैद ने विषय की प्रासंगिकता को स्पष्ट करते हुए कहा कि रामकथा भारतीय आदर्शों और मानवीय मूल्यों की रक्षा करने वाली शाश्वत गाथा है। समिति के पूर्व अध्यक्ष और हिन्दी-तमिल के लब्धप्रतिष्ठ लेखक डॉ० एन० सुंदरम ने अंगवस्त्र-पुस्तकें प्रदान कर विद्वान् अनुशीलकों का अभिनंदन किया। संगोष्ठी में विभिन्न विद्वानों ने मर्यादा पुरुषोत्तम राम के चरित्र पर आधारित विभिन्न भाषाओं में लिखी गई देश-विदेश की अनेक रामायणों का तुलनात्मक अनुशीलन अपने वक्तव्यों व आलेखों द्वारा प्रस्तुत किया।

रामदरश मिश्र का काव्य पाठ

नई दिल्ली, 'हमेशा आकाश से झरती है एक नदी/और हमेशा ऊपर ही ऊपर कोई पी लेता है धरती प्यासी की प्यासी रहती है/और कहने को आकाश से नदी बहती है।' यह छोटी-सी कविता है रामदरश मिश्र की जिससे उन्होंने आठ जुलाई को साहित्य अकादमी के गोष्ठी कक्ष में कवि संधि कार्यक्रम के तहत अपना काव्य-पाठ प्रारम्भ किया। विविध वस्तुओं और अनुभवों वाली उनकी कविताएँ श्रोताओं को अपने गहन प्रभाव में मग्न कर गयीं। मिश्रजी ने कुछ प्रभावशाली ग़जलें और गीत भी सुनाये जिससे उन्होंने काव्य-पाठ का समापन किया। काव्य-पाठ के पश्चात डॉ० श्याम सिंह शशि, डॉ० कमल किशोर

गोयनका, डॉ० अमरनाथ आदि ने कविताओं पर टिप्पणियाँ की तथा मिश्रजी से संवाद किया। इनके अतिरिक्त डॉ० प्रभाकर श्रोत्रिय, श्री हिमांशु जोशी आदि अनेक वरिष्ठ-कनिष्ठ साहित्यकारों का सान्निध्य कवि संधि कार्यक्रम को गरिमा प्रदान कर रहा था।

'अनहद' में काव्य-पाठ

पिछले दिनों म०गां०अ०हि०वि०, वर्धा के दिल्ली स्थित क्षेत्रीय केन्द्र में 'अनहद' के अन्तर्गत सुपरिचित कवि यू०के०एस० चौहान के काव्य-पाठ से साहित्यिक कार्यक्रम की शुरूआत हुई। आमन्त्रित लेखकों एवं श्रोताओं का स्वागत करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति एवं प्रतिष्ठित कथाकार विभूति नारायण राय ने कहा कि विश्वविद्यालय के दिल्ली केन्द्र में यह पहला कार्यक्रम है। अब तीनों पत्रिकाएँ यहीं से प्रकाशित होना शुरू हो गई हैं। इसे एक ऐसे केन्द्र के रूप में विकसित करने की योजना है जहाँ बिना किसी भेद-भाव के विचार-विमर्श का सिलसिला शुरू हो सके।

'पुस्तक वार्ता' के सम्पादक 'अनहद' के संयोजक भारत भारद्वाज ने कहा कि आज कविता पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं जिसके कारणों की तलाश कवि और आलोचक ही नहीं बल्कि पाठक भी कर रहे हैं। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि 'हंस' सम्पादक राजेन्द्र यादव ने कहा कि मैं कतई कविता विरोधी नहीं हूँ लेकिन उन कविताओं का विरोधी जरूर हूँ जो इधर पत्र-पत्रिकाओं में छप रही हैं।

गोष्ठी के अध्यक्ष प्रो० गंगा प्रसाद विमल ने कहा कि चौहानजी की कविताएँ बड़े सवालों को सामने लाती हैं। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो० नामवर सिंह ने संक्षिप्त लेकिन सधे लहजे में कहा कि मैंने उमेशजी को तब से देखा है जब चांदनी को गांठ में बाँधा करते थे, अब वे नई नस्ल के कबूतर उड़ाने लगे हैं उनकी इसी उड़ान को देखने यहाँ मैं आया हूँ। गोष्ठी में वरिष्ठ कथाकार कवि-लेखक रवीन्द्र कालिया (सम्पादक 'नया ज्ञानोदय') ममता कालिया (सम्पादक 'हिन्दी') शेरजंग गर्ग, प्रदीप पंत, आदि उपस्थित थे। गोष्ठी का संचालन भारत भारद्वाज ने किया।

लघु पत्रिका आंदोलन पर परिचर्चा

भोपाल स्थित भारत भवन में लघु पत्रिका आन्दोलन एवं साहित्यिक पत्रकारिता विषय पर तीन दिवसीय आयोजन किया गया, जिसमें चालीस सम्पादकों ने भाग लिया। उद्घाटन सत्र के अलावा चार सत्रों में लघु पत्रिका के विविध पक्षों पर सविस्तार चर्चा की गई। डॉ० प्रभाकर श्रोत्रिय का कहना था कि लघु पत्रिका निकालना साहित्य का 'एक्टिविज्म' है। विभूति नारायण राय, ध्रुव शुक्ल, अखिलेश, विनोद भारद्वाज, प्रयाग शुक्ल, हरिनारायण, गोपाल राय, हेतु भारद्वाज, कैलाशचंद्र पंत, बलराम, ब्रजेन्द्र त्रिपाठी आदि सम्पादकों ने अपने विचार रखे।

राजभाषा हिन्दी विशिष्ट व्याख्यानमाला

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान में 'राजभाषा हिन्दी विशिष्ट व्याख्यानमाला' के द्वितीय पुष्प में मुख्य अतिथि के रूप में अपने विचार व्यक्त करते हुए प्रो० रविकुमार 'अनु', हिन्दी विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला ने इस धारणा को मिथ्या बताया कि हिन्दी की दशा दयनीय है। इस धारणा का मुख्य कारण सरकार की ओर से किए जा रहे हिन्दी भाषा संवर्द्धन सम्बन्धी प्रयत्न हैं, जिनसे यह लगता है कि हिन्दी सरकारी अवलम्ब पर ही जीवित है। सत्य तो यह है कि भाषा पर अधिकार लोक का है। लोक ही भाषा का पोषण करता है। भाषा का वर्चस्व लोक के पास होता है, सरकार के पास नहीं। हिन्दी बोलने वालों की संख्या अंग्रेजी बोलने वालों से दस करोड़ अधिक है। विश्व के 165 विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जाती है। अंग्रेजी विश्व के मात्र पाँच देशों में राजकीय रूप से अपनायी गई है। इस पर भी जहाँ अंग्रेजी अपनाई गई है उन देशों में भी अंग्रेजी का सम्पूर्ण वर्चस्व नहीं है। हिन्दी हमारी पहचान का परिचय है, संकोच का आधार नहीं है, यह हमारी राष्ट्रीयता का भी परिचय है। संस्थान के वैज्ञानिक स्वरूप का उल्लेख करते हुए प्रो० 'अनु' ने फ्रांस, जर्मनी, इटली, चीन आदि देशों का उदाहरण देते हुए कहा कि वैज्ञानिक अनुसंधान भी हिन्दी के माध्यम से हो सकता है।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए संस्थान के वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी डॉ० दिनेश चमोला ने कहा कि राजभाषा हिन्दी का प्रयोग स्वाभिमान का प्रतीक है।

शिक्षा द्वारा चरित्र विकास जरूरी : आर०सी० लाहोटी

''शिक्षा मात्र ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं है। उससे चरित्र का विकास होना चहिए। मनुष्य पशु से कुछ अलग है, तो वह शिक्षा के कारण है। शिक्षक शिष्य के अंतर्निहित गुणों को जागृत करने में उल्लेखनीय भूमिका निभाता है। नव उन्नयन साहित्यिक संस्था वक्त की चुनौतियों का सामना करने में मील का पत्थर साबित होगी और सहृदय पत्रिका नई रचनाधर्मिता का नवीन स्वर बनेगा।'' ये विचार भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री आर०सी० लाहोटी ने दिल्ली विश्वविद्यालय के कला संकाय में नव उन्नयन साहित्यिक सोसाइटी (पंजी०) के उद्घाटन एवं 'सहृदय' त्रैमासिक पत्रिका के लोकार्पण समारोह के अवसर पर अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में व्यक्त किए। न्यायमूर्ति लाहोटी ने यह भी रेखांकित किया कि हिन्दी पठन-पाठन, शोध-विमर्श एवं विशुद्ध साहित्यिक गतिविधियों को मूर्त रूप देने में डॉ० पूरन चंद टंडन का यह मार्गदर्शन और शुरुआत उपयोगी सिद्ध होगी।

विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार चित्रा मुदगल ने कहा कि विश्वविद्यालय नव निर्माण की आधारभूमि होता है और समाज में व्याप्त अंधेरों को भाँप कर रचनात्मकता की ओर अग्रसर होना आज की आवश्यकता है। प्रतिष्ठित साहित्यकार हिमांशु जोशी ने अपने वक्तव्य में शिक्षकों को राष्ट्र का भविष्य निर्माता और युग द्रष्टा बताया, जो युवाओं की ऊर्जा को सही दिशा देने की क्षमता रखते हैं।

भारतीय भाषाओं में बाल-साहित्य

नई दिल्ली के भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् के सभागार में उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान एवं भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् के तत्त्वावधान में हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में बाल-साहित्य विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। राजेन्द्र अवस्थी की अध्यक्षता में कन्हैयालाल नंदन ने उद्घाटन करते हुए कहा कि बच्चों के लिए कम्प्यूटर की शिक्षा पर विशेष जोर दिया जाना चाहिए, क्योंकि आजकल वे पुस्तकों की बजाय कम्प्यूटर से ज्यादा जानकारी प्राप्त कर रहे हैं। विषय प्रवर्तन करते हुए प्रकाश मनु ने बाल-साहित्य पर सविस्तार प्रकाश डाला। डॉ० हरिकृष्ण देवसरे ने बाल-साहित्य की विभिन्न पत्रिकाओं के बारे में चर्चा की।

राष्ट्रीय बाल-साहित्य संगोष्ठी

भोपाल के जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में बच्चों की त्रैमासिक पत्रिका 'बालप्रहरी' के तत्त्वावधान में आयोजित चतुर्थ राष्ट्रीय बाल-साहित्य संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में राजेन्द्र उपाध्याय, फतेहसिंह लोढ़ा, प्रेमचंद गुप्ता 'विशाल', चंद्रपाल सिंह तोमर, डॉ० सरस्वती बाली सहित 15 साहित्यकारों को सम्मानित किया गया।

संगोष्ठी को डॉ० विनोद चंद्र पाण्डेय 'विनोद', डॉ० राष्ट्रबंधु, यशोधर मठपाल, डॉ० लता पाण्डे, डॉ० त्रिलोचन, रविशंकर शर्मा, डॉ० हरिसुमन बिष्ट, राजेन्द्र उपाध्याय, डॉ० शकुंतला कालरा, डॉ० भैरूलाल गर्ग और डॉ० रामनिवास मानव आदि बाल-साहित्यकारों ने सम्बोधित किया। संगोष्ठी में उड़ीसा, महाराष्ट्र एवं उत्तर भारत के 128 साहित्यकार उपस्थित थे।

ऑथर्स गिल्ड का सम्मेलन

नई दिल्ली के भारतीय लोक प्रशासन संस्थान के सभागार में ऑथर्स गिल्ड ऑफ इण्डिया द्वारा दो दिवसीय वार्षिक सम्मेलन का आयोजन किया गया। 'वर्तमान साहित्य, गिरते हुए मूल्य और लेखक की नियति' विषय पर

मुख्य अतिथि पूर्व राज्यपाल टी०एन० चतुर्वेदी ने कहा कि मूल्यों में गिरावट का कारण स्वयं लेखक को ही खोजना होगा।

कश्मीर की आदि कवयित्री ललद्यद

जम्मू स्थित के०एल० सहगल सभागार में जम्मू एवं कश्मीर भाषा व संस्कृति अकादमी तथा नेशनल बुक ट्रस्ट के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में 14वीं शताब्दी की मशहूर कश्मीरी संत कवयित्री ललद्यद के जीवन पर केन्द्रित उपन्यास का लोकार्पण करते हुए रतनलाल शांत ने कहा कि कश्मीरी भाषा की आदि कवयित्री ललद्यद की कविताएँ किसी रूहानी शक्ति से कम नहीं हैं। इस उपन्यास का डोगरी से हिन्दी में अनुवाद वेद राही ने किया है।

रमणिका गुप्ता की 'लहरों की लय'

नई दिल्ली के हिन्दी भवन सभागार में आयोजित कार्यक्रम में रमणिका गुप्ता की विदेश यात्राओं के संस्मरणों की पुस्तक 'लहरों की लय' का लोकार्पण करते हुए प्रो० असगर वजाहत ने कहा कि यात्रा-विवरण और यात्रा-संस्मरण अलग-अलग चीजें हैं। यात्रा-संस्मरण में लेखक की नजर में दुनिया को देखा जाता है जिसमें कुछ स्पंदन होता है।

इस अवसर पर राजेंद्र यादव, अशोक वाजपेयी आदि ने कृति की विशेषताओं को रेखांकित किया।

धीरेन्द्र अस्थाना का 'देशनिकाला'

मुंबई के दुर्गादेवी सराफ सभागृह में लोकमंगल द्वारा आयोजित कार्यक्रम में धीरेन्द्र अस्थाना के उपन्यास 'देशनिकाला' का लोकार्पण करते हुए जगदंबा प्रसाद दीक्षित ने कहा कि यह उपन्यास मुंबई के फिल्मी जीवन का आईना है। इसमें वर्तमान यथार्थ से आगे जाकर एक नए यथार्थ को स्थापित करने की कोशिश की गई है। देवीप्रसाद त्रिपाठी, देवमणि पांडेय, डॉ० राजम पिल्लै, सागर सरहदी, विश्वनाथ सचदेव, डॉ० रामजी तिवारी, अशोक सिंह आदि ने उपन्यास की सराहना की। इसी क्रम में संस्था द्वारा धीरेन्द्र अस्थाना का सम्मान किया गया।

रेणु, राजकपूर और तीसरी कसम

अ०प्र०सिं० विश्वविद्यालय, रीवा के हिन्दी विभाग के सभागार में एक व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसका विषय 'रेणु, राजकपूर और तीसरी कसम' था। व्याख्यान-सभा में प्रसिद्ध आलोचक, चिंतक एवं दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व आचार्य डॉ० विश्वनाथ त्रिपाठी मुख्य अतिथि थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता चर्चित कवि एवं रीवा विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ० दिनेश कुशवाहा ने किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के उपाचार्य डॉ० वेद प्रकाश मौजूद थे।

आचार्य त्रिपाठी ने कहा कि रेणु व आंचलिकता में एक अंतर्सम्बन्ध है। फणीश्वर नाथ रेणु ही ऐसे साहित्यकार हैं, जिन्होंने साहित्य में आंचलिकता को प्रवेश कराया।

पाखण्ड व बर्बरता साम्राज्यवाद की विशेषता—मैनेजर पाण्डेय

किसानों, मजदूरों और निम्न मध्य वर्ग की बदहाल स्थिति के लिए समाज का पूँजीवादी चेहरा जिम्मेदार है। पूँजीवाद, साम्राज्यवाद हमेशा से ही किसान विरोधी रहा है। अखण्ड पाखण्ड व जन्मजात बर्बरता साम्राज्यवाद की स्थाई विशेषता है। यह बातें हिन्दी के वरिष्ठ आलोचक प्रो० मैनेजर पाण्डेय ने 'आज के समय में देश की बात' विषय पर महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के इलाहाबाद स्थित क्षेत्रीय केन्द्र के 'सत्यप्रकाश मिश्र सभागार' में आयोजित विशेष व्याख्यान में कहीं।

प्रो० पाण्डेय ने कहा कि साम्राज्यवाद को समझने के लिए पूँजीवाद के विकास को जानना एवं इतिहास को कैसे पढ़ें यह महत्त्वपूर्ण है। सखाराम गणेश देउस्कर के हवाले से उन्होंने कहा कि उनकी पुस्तक 'देशेर कथा' (1904 में प्रकाशित) देश की आर्थिक राजनैतिक स्थिति का सप्रमाण आकलन करती है। यह पुस्तक मूलत: साम्राज्यवाद विरोधी है। अंग्रेजी सरकार ने परेशान होकर इस पुस्तक को 1910 में प्रतिबन्धित कर दिया था। साम्राज्यवाद किस प्रकार गुलाम देश के दिमाग पर कब्जा करता है, यह पुस्तक प्रमाणित करती है। यह स्वदेशी आन्दोलन को पैदा करने वाली पुस्तक है। 'स्वराज' शब्द का पहली बार प्रयोग इस पुस्तक में किया गया है।

उन्होंने अफसोस जाहिर किया कि ब्रिटिश हुकूमत की पीड़ादायक गुलामी की जंजीरों से जकड़े भारत को आजाद करने की अलख एवं जीतोड़ मेहनत जिन कलम के सिपाहियों ने की तथा देशहित में अपने आपको समर्पित कर देने वाले लेखक माधवराव सप्रे तथा सखाराम गणेश देउस्कर का नाम आधुनिक युग के हिन्दी लेखकों को भी याद नहीं रह गया है। ऐसे में यह कहना अप्रासंगिक न होगा कि हिन्दी भाषा के पाठक ही नहीं बल्कि आज के लेखक भी सांस्कृतिक विस्मरण से ग्रस्त हैं।

'संवाद' के अन्तर्गत आयोजित विशेष व्याख्यान 'आज के समय में देश की बात' कार्यक्रम का संचालन महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के इलाहाबाद स्थित क्षेत्रीय केन्द्र के निदेशक संतोष भदौरिया ने किया। प्रो० मैनेजर पाण्डेय का स्वागत बहुवचन के सम्पादक प्रो० राजेन्द्र कुमार ने किया।

स्मृति-शेष

हास्य कवि ओम व्यास का निधन

हास्य, व्यंग्य और कविता प्रेमियों को विगत दिनों एक और सदमा लगा। पिछले एक माह से जिन्दगी से संघर्ष कर रहे मशहूर हास्य कवि ओम व्यास का दिल्ली में निधन हो गया। व्यास पिछले महीने एक सड़क हादसे में गम्भीर रूप से घायल हो गए थे। उनका दिल्ली के अपोलो अस्पताल में इलाज चल रहा था। उल्लेखनीय है कि गत 8 जून को विदिशा में आयोजित बेतवा महोत्सव से भोपाल लौट रहे कवियों का वाहन दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। इस हादसे में हास्य कवि ओम प्रकाश व्यास आदित्य, लाड सिंह और नीरज पुरी की मौके पर ही मौत हो गई थी जबकि ओम व्यास गम्भीर रूप से घायल हो गए थे।

जयकिशन दास सादानी नहीं रहे

'कामायनी' एवं 'आँसू' के अंग्रेजी अनुवादक श्री जयकिशन दास सादानी नहीं रहे। उन्होंने प्राच्य संस्कृति के अनुशीलन के साथ कई ग्रन्थों का प्रणयन एवं सम्पादन किया। श्री सादानी जी ने श्री विट्ठलदास मूँदड़ा को साथ लेकर आठ खण्डों में 'एनसाइक्लोपीडिक सर्वे ऑफ इण्डियन कल्चर' का सम्पादन किया है। इस बृहद् कार्ययोजना के अन्तिम आठवें खण्ड के प्रकाशन के कुछ दिनों बाद उनकी इहलीला समाप्त हो गयी।

युवा पत्रकार शैलेंद्र सिंह का निधन

नई दिल्ली में युवा पत्रकार शैलेंद्र सिंह का एक कार-दुर्घटना में निधन हो गया। 42 वर्षीय शैलेंद्र सिंह प्रिंट मीडिया में कार्य करने के उपरान्त इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में गए थे और कई टी०वी० चैनलों से संबद्ध थे। वह एक सफल कवि और गजलकार थे। उनकी दो काव्य-पुस्तकें प्रकाशित हैं।

बुकर विजेता का निधन

बुकर पुरस्कार से सम्मानित उपन्यासकार **स्टैनली मिडलटन** का 89 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। मिडलटन ने नॉटिंघम में गत 25 जुलाई को अन्तिम साँस ली। मिडलटन के 44 उपन्यासों में से लगभग सभी नॉटिंघम पर ही आधारित थे।

याद किए गए प्रो० शुकदेव सिंह

वाराणसी, कबीर विवेक परिवार ने विगत दिनों प्रो० शुकदेव सिंह को याद किया। नागरी प्रचारिणी सभा में उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई। अध्यक्षता डॉ० शितिकंठ मिश्र ने की। डॉ० राम सुधार सिंह ने कबीर साहित्य के अध्ययन में प्रो० शुकदेव सिंह के कृतित्व के महत्त्व की चर्चा की। डॉ० गिरीश चंद्र चौधरी को स्मृति चिह्न भेंटकर सम्मानित किया गया।

'भारतीय वाङ्मय' परिवार की ओर दिवंगत आत्माओं को विनम्र श्रद्धांजलि।

पुस्तक समीक्षा

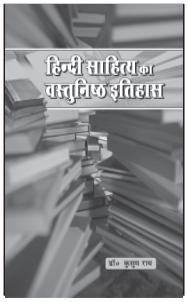

हिन्दी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास

डॉ० कुसुम राय

प्रथम संस्करण : 2008 ई०

सजि. : रु० 400.00 ISBN: 978-81-7124-623-6
अजि. : रु० 250.00 ISBN: 978-81-7124-624-3

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

प्रश्नोत्तर शैली में गम्भीर ग्रन्थ : 'हिन्दी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास'

हिन्दी साहित्य के इतिहास-ग्रन्थों में 'हिन्दी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास' अनूठा और गम्भीर ग्रन्थ है जो आदिकाल से लेकर रीतिकाल तक की सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध कराता है। इसके वर्ण्य-विषय, प्रस्तुति के ढंग, तथ्यों की सूक्ष्म किन्तु प्रामाणिक जानकारी, विद्वानों के मतों का समावेश, तर्क-वितर्क आदि को देखकर कहा जा सकता है कि हिन्दी साहित्य के इतिहास की पुख़्ता जानकारी कराने वाला अपने आप में यह एक प्रामाणिक ग्रन्थ है।

आलोच्य ग्रन्थ में लेखिका ने बहुत सारे उन सूक्ष्म तथ्यों पर से परदा उठाया है जिन पर आज तक किसी विद्वान लेखक-समीक्षक की दृष्टि नहीं पड़ी थी और इस प्रकार बहुत-सी महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ अनावृत्त होने से वंचित रह गयी थीं। पुस्तक काफी रोचक शैली में लिखी गयी है। बदलते हुए युग की माँग के अनुरूप यह ग्रन्थ शोधार्थियों, विद्वान प्राध्यापकों, यू०जी०सी० की नेट/जे०आर०एफ० व अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में हिन्दी विषय लेकर परीक्षा की तैयारी कर रहे प्रतियोगी छात्रों के लिए यह कृति अत्यन्त कारगर साबित होगी, ऐसा विश्वास है। क्योंकि प्रतियोगी परीक्षाओं में ठीक उसी तरह के प्रश्न पूछे जाते हैं जिस तरह के प्रश्न इस पुस्तक में दिये गये हैं। प्रश्नों को पूछने और उनके उत्तरों को लिखने के ढंग को दृष्टिगत रखते हुए कृति तैयार की गयी है साथ ही बहुत सारे विवादों का अंत भी हुआ है। इस इतिहास-ग्रन्थ को पढ़ने के बाद जिज्ञासु लोगों को इससे सम्बन्धित भिन्न-भिन्न विद्वानों के अलग-अलग इतिहास-ग्रन्थों को पढ़ने की ज़रूरत नहीं रह जायेगी। विदुषी लेखिका ने इसमें अपने समय के ख्यात-अख्यात सभी इतिहास-लेखकों के मतों का जो समावेश किया है उसके कारण अलग से कहीं कुछ ढूँढ़ने की ज़रूरत नहीं रह जाती है।

समीक्ष्य पुस्तक में प्रथम इतिहास-ग्रन्थ लेखक गार्सा-द-तासी से लेकर क्रमवार अद्यतन लेखकों तक का विवरण प्रस्तुत किया गया है। गार्सा-द-तासी, जार्ज ग्रियर्सन, आचार्य शुक्ल, मिश्र बंधु, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, श्यामसुन्दर दास, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', इन्द्रनाथ मदान, रामकुमार वर्मा, रमाशंकर शुक्ल 'रसाल', पं० रामनरेश त्रिपाठी, मोतीलाल मेनोरिया, ब्रजरत्न दास, कृपाशंकर शुक्ल, डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय आदि जैसे ख्यातिप्राप्त इतिहास-ग्रन्थ लेखकों के साथ ही डॉ० (श्रीमती) कुसुम राय ने मौलवी करीमुद्दीन (प्रथम भारतीय इतिहास-ग्रन्थ लेखक), महेशचन्द्र शुक्ल, एडविन ग्रिब्स, एफ०ई०के०, गंगाप्रसाद 'अखोरी', गौरीशंकर द्विवेदी, सूर्यकान्त शास्त्री प्रभृति विद्वानों और उनके इतिहास-ग्रन्थों को भी आदर दिया है साथ ही उनकी मुख्य प्रवृत्तियों पर भी पूरी ईमानदारी व तटस्थता के साथ प्रकाश डाला है। 19वीं सदी के पूर्व के विभिन्न कवियों, लेखकों द्वारा लिखित परिचयात्मक ग्रन्थों का विवरण भी पूरी तरह से आलोच्य कृति में मिलता है।

भाषा-विज्ञान के अध्ययन की दृष्टि से कृति बहुत उपयोगी है। हिन्दी भाषा के उद्भव एवं विकास की लम्बी यात्रा को लेखिका ने जीवंत एवं यथासम्भव प्रामाणिक विवरण के साथ प्रस्तुत किया है साथ ही 'पूर्वपीठिका' शीर्षक के अन्तर्गत 'हिन्दी' शब्द की व्युत्पत्ति सहित भारोपीय परिवार से हिन्दी का सम्बन्ध, उसकी बोलियों का विकास, बोलियों का एक-दूसरे से पूर्वापर सम्बन्ध, भारतीय आर्यभाषाओं की परिवर्तनगामी यात्रा, वैदिक-लौकिक संस्कृत, प्राकृत, पालि और अपभ्रंश से होते हुए खड़ी बोली तक की यात्रा के इतिहास का भी सम्यक विवेचन किया है। इतिहास-लेखन के लिए जिस तटस्थता, वस्तुपरकता और तथ्यों की प्रामाणिकता के साथ प्रामाणिक निष्कर्षों की निर्णयात्मक शक्ति होने का गुण अपेक्षित माना जाता है उनका समावेश कृति में मिलता है।

पूरी कृति 'पूर्व पीठिका', 'साहित्य का इतिहास : अर्थ-विवेचन', 'हिन्दी साहित्य के विविध इतिहास ग्रन्थ', 'हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल-विभाजन और नामकरण' सहित कुल आठ खण्डों में बाँटी गयी है। जिनमें आगे चलकर 'आदिकाल', 'भक्तिकाल' और 'रीतिकाल' को छोटे-छोटे उपशीर्षकों में बाँटकर अपने अध्ययन व अध्ययन के उद्देश्य को पूर्णता तक पहुँचाने का प्रयास किया गया है। उक्त तीनों कालों से सम्बन्धित कोई तथ्य लेखिका की पकड़ से अछूता नहीं रह जाय ऐसा प्रयास किया गया है। निश्चित रूप से लेखिका के लम्बे समय के कठोर श्रम का प्रतिफल है यह महत्त्वपूर्ण पुस्तक। आगे डॉ० कुसुम राय की योजना 19वीं सदी से लेकर आधुनिक काल तक के इतिहास को इसी शैली में प्रस्तुत करने की है। लेखिका की श्रमनिष्ठा और लेखन-क्षमता को देखते हुए उसे सफलता मिलेगी, इसमें सन्देह नहीं और हिन्दी-संसार को हिन्दी साहित्य के वस्तुनिष्ठ इतिहास के इस दूसरे भाग की प्रतीक्षा रहेगी। **—डॉ० विवेकी राय,** गाजीपुर

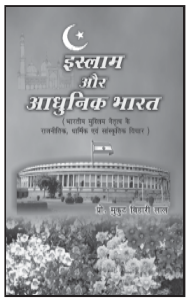

इस्लाम और आधुनिक भारत (भारतीय मुस्लिम नेतृत्व के राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक विचार)

प्रो० मुकुटबिहारी लाल

सम्पादक

सत्यप्रकाश मित्तल

प्रथम संस्करण : 2009 ई० पृष्ठ : 136

सजि. : रु० 120.00 ISBN: 978-81-7124-677-9
अजि. : रु० 70.00 ISBN: 978-81-7124-678-6

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

आधुनिक युग के सुप्रसिद्ध मुस्लिम नेताओं की विवेचना पर आधारित यह पुस्तक बहुत रोचक एवं लाभदायक है। महान विभूतियों के विचार एवं दृष्टिकोण जनसाधारण के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होते हैं। लोग अपने-अपने विचारानुसार व्याख्या करते हैं। महान लोगों के सम्बन्ध में यह ध्यान रखना आवश्यक है कि पवित्र क़ुरान एवं हदीस के जो तथ्य हमारे सामने हैं उनकी तुलना में किसी भी महान व्यक्ति के भिन्न विचार अथवा दृष्टिकोण कदापि मान्य नहीं हैं। मूल स्रोत (पवित्र क़ुरान व हदीस) से भिन्न विचारों की विवेचना अथवा व्याख्या आवश्यक है क्योंकि सत्य, असत्य की उपस्थिति में ही अधिक स्पष्ट होता है।

श्री सत्यप्रकाश मित्तल ने प्रस्तुत पुस्तक के सरलीकरण के लिए जो परिश्रम किया है और पुस्तक को वर्तमान स्वरूप दिया है उससे प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति, विशेष कर आधुनिक युग की प्रगति को समझने की इच्छा रखनेवाला नवयुवक, लाभान्वित होगा।

मेरा विचार है कि प्रत्येक मुस्लिम विद्वान (जो गम्भीर भी हो) क्रान्ति एवं प्रगति का पक्षधर होता है। परन्तु क्रान्ति एवं प्रगति का शाब्दिक अर्थ विभिन्न उद्देश्यों के लिए प्रयोग हो रहा है। इसलिए आवश्यक है कि उसकी यथार्थ एवं स्पष्ट परिभाषा निश्चित कर ली जाय। आज की पाश्चात्य सभ्यता भौतिक उन्नति की दौड़ में

नैतिक मूल्यों को भूल चुकी है परन्तु पूर्वी सभ्यता का प्रतिनिधि (किसी भी धर्म का अनुयायी) ऐसी उन्नति को पसन्द नहीं कर सकता। उसकी दृष्टि में नैतिक मूल्यों की रक्षा परमावश्यक है तथा प्रत्येक उन्नति को नैतिकता का पालन करना ही चाहिए।

पाश्चात्य दुनिया की उन्नति को हम सब स्वीकार करते हैं। लेकिन वह लोग शक्ति के मद में न्याय से बहुत दूर हो गये हैं। शक्ति के मद में इतने अँधे हो गये हैं कि निर्बलों को क्रूरता से पददलित कर रहे हैं। जब हम पश्चिम की प्रगति का उदाहरण प्रस्तुत करें तो यह स्पष्टीकरण आवश्यक है कि पश्चिम की भाँति हमें न्यायविमुख नहीं होना चाहिए तथा निर्बलों के लिए हमारे हृदय में दया अवश्य होनी चाहिए।

प्रगति की इस दौड़ में धार्मिक व्यक्तियों तथा नैतिक मूल्यों का सम्मान करने वालों को रूढ़िवादी कहा जाता है। परन्तु धर्म के मूल स्रोतों की मौलिक बातों पर आस्था रखे बगैर कोई भी व्यक्ति धार्मिक (नैतिक) हो ही नहीं सकता (धर्म जो भी हो) विशेषकर इस्लाम की दृष्टि में मूल स्रोतों (पवित्र क़ुरान व हदीस) के मौलिक तथ्य मनसा-वाचा-कर्मणा स्वीकार किये बगैर कोई व्यक्ति मुसलमान हो ही नहीं सकता। मुसलमान यह सोच भी नहीं सकता कि क़ुरान व हदीस में जो निर्देश दिये गये हैं उन्हें अपनी इच्छानुसार स्वीकार करने अथवा अस्वीकार करने में वह स्वतन्त्र है।

पवित्र क़ुरान में ऐसे सभी ज्ञान-विज्ञानों को सीखने और फैलाने की प्रेरणा है जो मानव मात्र के लिए कल्याणकारी हो। इसलिए हमारे लिए आवश्यक है कि ज्ञानवर्धन के लिए हम प्रयत्नशील रहें तथा अपनी उचित आवश्यकतापूर्ति के लिए नये-नये आविष्कार हेतु अधिक से अधिक ज्ञान-विज्ञान सीखें।

सर सैयद अहमद खाँ ने मुसलमानों के शैक्षिक एवं सामाजिक सुधार का प्रयत्न किया। उनके इस प्रयत्न की सराहना सभी मुसलमान करते हैं तथा उनके इस आन्दोलन को आगे बढ़ाने की कोशिश करते हैं। उन्हीं की कोशिश से अलीगढ़ में मुस्लिम यूनिवर्सिटी की स्थापना हुई और आज भी वह यूनिवर्सिटी के शुभचिंतक हैं। बल्कि यह भी प्रस्ताव है कि इसी ढंग की एक और यूनिवर्सिटी स्थापित की जाए।

फिर भी, सर सैयद खाँ की धार्मिक सुधार की समस्या शोचनीय है। यह बात सर्वविदित है कि पवित्र क़ुरान व हदीस के किसी आदेश-निर्देश में किसी प्रकार का संशोधन करने का अधिकार किसी को प्राप्त नहीं है। परन्तु सर सैयद खाँ ने कुछ ऐसी बातें प्रस्तुत कीं जिसे मुस्लिम विद्वानों ने धर्म के विरुद्ध घोषित किया।

इसी प्रकार अंग्रेजी सभ्यता एवं शिक्षा के सम्बन्ध में भी कतिपय विद्वानों का उनसे विरोध है जिनमें कुछ अरब भी हैं। उन विद्वानों का यह कहना है कि सर सैयद अहमद खाँ अंग्रेजों के समर्थक थे। इस प्रकार की मतभिन्नता स्वाभाविक है। पूर्ण जनसमर्थन तो किसी आन्दोलनकारी को कभी नहीं प्राप्त हुआ है। सर सैयद के प्रगतिवादी आन्दोलन से लोग सहमत थे।

एक बात ध्यान देने योग्य यह भी है कि मुस्लिम समाज में जो अनुचित रीति-रिवाज प्रचलित हैं उन्हें समाप्त करने का कोई भी विरोधी नहीं है। परन्तु यदि और आगे बढ़कर कोई यह कहे कि पवित्र क़ुरान की प्रामाणिक बातों में कुछ संशोधन या परिवर्तन कर दिया जाय तो इसके लिए कोई भी मुसलमान सहमत न होगा। इस प्रकार के संशोधन का अधिकार किसी व्यक्ति, समाज अथवा सरकार को कदापि नहीं है। धर्म की पूर्णता यथावत रखना अनिवार्य है।

जहाँ तक धर्म को राजनीति से पृथक रखने या धर्म को व्यक्तिगत जीवन तक सीमित रखने की बात है तो उसका कुछ स्पष्टीकरण पहले आ चुका है तथा यह कहना शेष है कि जिन समस्याओं में चाहे वह राजनीति सम्बन्धी हों या व्यक्तिगत जीवन से सम्बन्धित हों, इस्लाम का कोई आदेश-निर्देश प्रस्तुत हो तो उसे छोड़ने के लिए मुसलमान के पास कोई तर्क नहीं है। यदि कोई बड़ा से बड़ा व्यक्तित्व बाध्य करे तो मुसलमान को उसे स्वीकार करना कठिन ही नहीं, असम्भव है। इस तथ्य को ध्यान में रखा जाय तो इस्लाम एवं मुसलमान के सम्बन्ध में उचित राय स्थापित करने में सरलता होगी।

अन्त में एक बार मैं पुन: मित्तल साहब और प्रो० मुकुट बिहारी लाल के परिश्रम की सराहना करते हुए उनके प्रति आभार प्रकट करता हूँ कि उन्होंने नयी पीढ़ी को महान विभूतियों से परिचित कराने का प्रशंसनीय कार्य किया है।

—डॉ० मुक़्तदा हसन अज़हरी
अध्यक्ष तथा पूर्व रेक्टर
जामिया सलफीया, वाराणसी

किताबों की बातें

● 'बुकवर्म' आप इस शब्द से जरूर परिचित होंगे। बुकवर्म दो तरह के होते हैं। पहला, जो किताबें पढ़ने के तहत ज्यादा शौकीन होते हैं। उन्हें 'बुकवर्म' या किताबी कीड़ा भी कहा जाता है। और दूसरा, वह कीड़ा, जिसे सचमुच किताबों के पन्ने खाना बहुत पसंद है।

● दुनिया की बेस्ट सेलिंग बुक की फेहरिस्त में टॉप पर है 'द बाइबिल'। इसके बाद सबसे ज्यादा बिकने वाली किताबें हैं— 'क्वेश्चन फ्रॉम चेयरमैन माओ जेदोंग', 'द कुरान', 'झिंहुआ जिदिआँ', 'द बुक ऑफ मॉरमॉन'।

मलिक मुहम्मद जायसी
कृत
'पदुमावति'
[एक नया पाठ और साहित्यिक व्याख्या]
संपादक : **डॉ० कन्हैया सिंह**

'पदुमावति' का नया पाठ

मध्यकालीन साहित्य के विशेषज्ञ डॉ० कन्हैया सिंह ने जायसी की प्रामाणिक कृति 'पदुमावति' के पाठालोचन के साथ उसकी नई टीका लिखी है, जिसका एक संक्षिप्त इतिहास है। कभी डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह ने जायसी की 'पदुमावति' की एक दुर्लभ प्रति के आधार पर एक अपना पाठ बनाया था। टीका-निर्धारण की प्रक्रिया में डॉ० कन्हैया सिंह उनके सहयोगी थे। उन्होंने वासुदेवशरण अग्रवाल, माताप्रसाद गुप्त तथा रामचंद्र शुक्ल के पाठों से तुलना करते हुए अपना पाठ बनाया था। यह महान् ग्रन्थ तैयार होता, तो इसे डॉ० भगवती प्रसाद सिंह तथा डॉ० कन्हैया सिंह का संयुक्त प्रयास माना जा सकता था।

इस बीच डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह नहीं रहे। अब यह महान् पाठ-सम्पादन का दायित्व अकेले डॉ० कन्हैया सिंह को करना था। उन्होंने परिश्रमपूर्वक सभी पाठों की सुसंगत छानबीन करके अपना स्वतन्त्र पाठ बनाया है और अब यह अभिनव ग्रन्थ प्रकाशनाधीन है। उनका प्राक्कथन प्रमाण है कि विश्लेषण में उनकी सजगता सच्ची अनुसंधान वृत्ति के कारण पूर्णता पा सकी है। मुझे विश्वास है कि डॉ० कन्हैया सिंह के सम्पादन में 'पदुमावति' का पाठ श्रेयस्कर और प्रामाणिक जान पड़ेगा। जहाँ बड़े आचार्यों ने पाठ-चयन में भयानक भूलें की हैं, वहाँ डॉ० कन्हैया सिंह का तार्किक विश्लेषण पर आधारित नया पाठ मूल्यवान सिद्ध होगा। यह एक लम्बी साधना का साक्ष्य है और डॉ० कन्हैया सिंह का पाठ अपेक्षया सुसंगत और काव्यात्मक जान पड़ेगा। उनकी लोक संवेदना भी पाठ-निर्मिति में सहायक है।

—डॉ० परमानंद श्रीवास्तव

सामान्य पाठकों, छात्रों, अध्येताओं, शोधार्थियों, पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं, स्कूल-कॉलेज, विश्वविद्यालय, सार्वजनिक पुस्तकालयों एवं सरकारी/ गैर सरकारी संस्थाओं आदि के सम्पूर्ण पुस्तकीय समाधान हेतु

तीन हजार वर्ग फुट में स्थापित पुस्तकों का विशाल शोरूम तथा इंटरनेट की वैश्विक दुनिया में स्थापित विशाल वर्चुअल शोरूम

http://www. vvpbooks.com *(With Online Shopping facility by Credit Card also)*

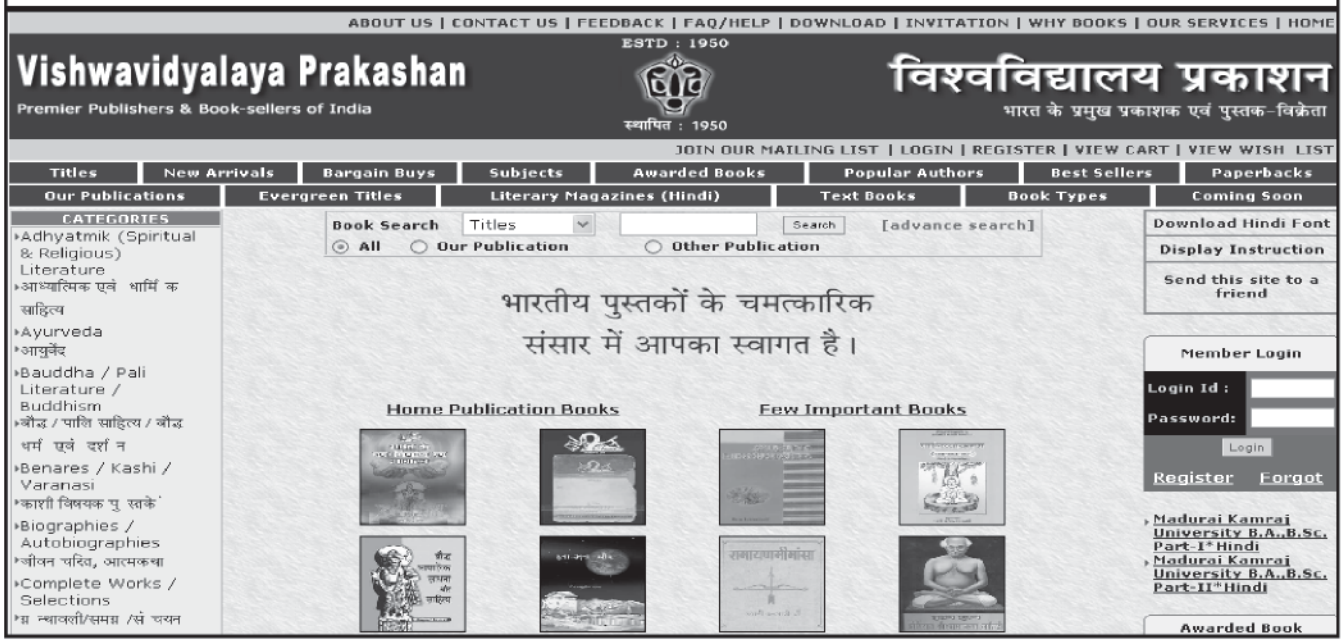

(Website is being updated regularly)

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

अनेकानेक विषयों के साथ आपकी सेवा में सदैव तत्पर

साहित्य, भाषा-विज्ञान, उपन्यास, कथा-कहानी, कविता, नाटक, आलोचना, समीक्षा, संस्मरण, जीवनी, आत्मकथा, यात्रा वृत्तांत आदि। अध्यात्म, योग, तंत्र-मंत्र, ज्योतिष, मनीषी-संत-महात्मा जीवनचरित, धर्म एवं दर्शन, भारत विद्या, इतिहास, कला एवं संस्कृति, पुरातत्त्व, अभिलेख, मुद्राएँ, संग्रहालय विज्ञान, वास्तु कला, जनसंचार, पत्रकारिता, संगीत, अर्थशास्त्र, वाणिज्य, प्रबन्धशास्त्र, राजनीति, शिक्षाशास्त्र, समाज विज्ञान, स्त्री-विमर्श, मनोविज्ञान, भूगोल, भू-विज्ञान, विशुद्ध विज्ञान जैसे—फिजिक्स, केमिस्ट्री, जूलॉजी, बॉटनी, बायोलॉजी और कम्प्यूटर साइंस आदि। मानविकी, समाज विज्ञान और कुछ विशेष विषयों के अन्तर्गत लगभग सभी विषयों की महत्त्वपूर्ण पुस्तकों की उपलब्धता सुनिश्चित कर सम्पूर्ण पुस्तकीय समाधान की ओर सतत प्रयासरत।

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

विशालाक्षी भवन, चौक (चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)

वाराणसी-221001 (उ०प्र०)

Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082 ● E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com ● Website : www.vvpbooks.com

Variety of Books by Variety of renowned Authors Published by Variety of renowned Publishers under one roof

पुस्तकें प्राप्त करने हेतु सुविधानुसार पधारें, लिखें, फोन/फैक्स करें, ई-मेल करें अथवा वेबसाइट का अवलोकन कर ऑनलाइन पुस्तकों का आदेश करें।

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

अब्बास कियारोस्तामी की कविताएँ : 'तनाव' पत्रिका के 110वें अंक में मूल ईरानी कवि अब्बास कियारोस्तामी की कविताएँ प्रकाशित हैं। इन कविताओं का फारसी से फिनिश भाषा में उल्था याक्को हैमेन आंविला ने किया और फिनिश भाषा से हिन्दी रूपांतर मोहम्मद सईद शेख द्वारा प्रस्तुत किया गया है। अब्बास वस्तुत: एक फिल्मकार हैं, उनकी निर्देशित फिल्में कई समारोहों में पुरस्कृत भी हो चुकी हैं। फिल्म-निर्देशक का यह नज़रिया उनकी कविताओं पर प्रभावी है। वे कैमरा-दृष्टि से किसी फिल्म के शॉट्स, फ्रेम्स और कट्स में कविताओं की रचना करते हैं इसीलिए उनकी रचनाएँ पूर्ण-अर्थ देने के बजाय बिम्ब-अर्थ में ही सिमट कर रह जाती हैं। वैसे मोहम्मद सईद शेख का यह रूपान्तर मूल का आस्वाद दो देता ही है। ''आया हूँ हवा के साथ/पहले ग्रीष्म-दिवस पर/हवा को ही तो जाना है मुझे/शरद के अंतिम दिवस में।''

विन्ध्याचल मण्डल समग्र : लेखक : डॉ० अर्जुनदास केसरी, लोकरुचि प्रकाशन, राबर्ट्सगंज, सोनभद्र (उ०प्र०), 281216, मूल्य : रु० 200/- मात्र

लब्धप्रतिष्ठ पत्रकार, लेखक डॉ० अर्जुनदास केसरी की यह कृति वस्तुत: क्षेत्रीय गज़ेटियर की तरह तैयार की गयी है। विंध्य क्षेत्र के तीन जनपद मिर्जापुर, सोनभद्र एवं भदोही का संक्षिप्त इतिहास, भौगोलिक एवं प्राकृतिक स्थिति, सांस्कृतिक परिदृश्य, सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था, प्रशासनिक ढाँचा आदि की प्रस्तुति अभिलेख-परक है। इसके अतिरिक्त पुस्तक के परिशिष्ट में क्षेत्र के स्वतन्त्रता-संग्राम-सेनानियों, राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त विशिष्ट व्यक्तियों, सांसदों, विधायकों की सूची के साथ मंडलायुक्तों और जिला पंचायत अध्यक्षों की भी सूची दी गयी है। जनपद के मानचित्र एवं छायाचित्रों को भी संलग्न किया गया है। अभिलेख-परक यह पुस्तक विद्वानों, शोधार्थियों और पुस्तकालयों की आवश्यकता पूर्ण करेगी।

लूर (अर्धवार्षिक), सम्पादक : डॉ० जयपाल सिंह राठौड़; (राजस्थान कोकलोर स्टडी एण्ड रिसर्च सोसायटी) गोपालबाड़ी, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) 342009, मूल्य : 100/-रु० मात्र

मिट्टी के सोंधी महक, हवा के ठंडे झोंकों और नदी की कलकल-रागिनी से भरपूर लोकगीतों की लय-ताल पर झूम उठता है जन-मानस। मनुष्य के संघर्षों और सुख-दु:ख को जनभाषा में व्यक्त करते लोकगीत क्षेत्र-विशेष की धरोहर होते हैं। 'लूर' के बन्नी लोकगीत विशेषांक में कन्या के विवाह के समय गाये जाने वाले उत्तर भारत के विभिन्न-अंचलों के गीतों पर शोधपूर्ण-समीक्षा का संकलन प्रस्तुत किया गया है। मैथिली, ब्रजी, मालवी, कुमाऊँनी, पंजाबी, बुंदेली, मेवाड़ी, राजस्थानी, अंगिका, वज्जिका आदि बोलियों-बानियों में अभिव्यक्त ये लोकगीत विवाह से पहले एक बेटी और उसके परिजनों की मानसिकता का परिचय देते हुए अपने स्नेहिल-संवेदन से सिंचित कर जाते हैं। 'लूर' के श्रमसाध्य संकलन की सार्थकता है यही स्नेह-सिंचन...।

ऐ मेरे दोस्त, लेखक : पं० सीताराम शर्मा, प्रकाशक : शिव संकल्प साहित्य परिषद्, श्री सेवाश्रम, नर्मदा मंदिरम्, शिवाजी नगर उपनिवेशिका, नर्मदापुरम्-461001, मूल्य : 50/-रु० मात्र

'मेकलसुता' त्रैमासिक पत्रिका के सौजन्य से प्रकाशित पं० सीताराम शर्मा की कृति 'ऐ मेरे दोस्त' एक अशीतिपर-व्यक्तित्व के अनुभवों का एकत्र रत्न है। मुक्त छंद कविता की तरह लिखे गये अनुभूत-अंश सूक्तियाँ बनते हैं, दिशा देते हैं। ''ज़िन्दगी की कई कतरनें/मेरे पास इकट्ठी हैं/ अगर तू जिल्द बना ले ऐ दोस्त/तो तेरी गाइड-बुक बन जायेगी।'' इसके बावजूद यह कोई नीति-काव्य नहीं है किन्तु सामाजिक बहुरूपियेपन और पाखण्ड के बीच आत्म-निरीक्षण की ओर प्रेरित करता है।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 10 **अगस्त 2009** **अंक : 8**

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक

स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 50.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003 RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at G.P.O. Varanasi

Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

☎ : Offi. : (0542) 2413741, 2413082, 2421472, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax: (0542) 2413082

E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)